क्या पहचान प्रिया की होगी !

● त्रिभुवनगिरि / राजेन्द्र बोरा

Scanned with CamScanner

क्या पहचान प्रिया की होगी

(खंडकाव्य)

रचना :
राजेन्द्र बोरा/त्रिभुवन गिरि

© :
राजेन्द्र बोरा
(महंत त्रिभुवनगिरि)

मूल्य :
100/-
150/- सजिल्द

संपर्क :
श्री लक्ष्मी भण्डार
(हुक्का क्लब)
खजांची मोहल्ला, अल्मोड़ा

प्रथम संस्करण :
घुघुतिया संक्रान्ति संवत् 2067

मुद्रक :
उत्तरायण कम्प्यूटर्स
चौघानपाटा, अल्मोड़ा
फोन : 232083
मो. : 9412092336

कम्प्यूटर कम्पोजिंग :
कुलदीप सिंह भण्डारी

Scanned with CamScanner

चि० विनोद पंत जी को
सादर/सप्रेम भेंट।

क्या पहचान प्रिया की होगी!

(खंडकाव्य)

Scanned with CamScanner

दो आँखर

'क्या पहचान प्रिया की होगी' काव्य आपके हाथों में है इसे आप तक पहुँचाने में श्याम सिंह कुटौला, डॉ. महेन्द्रसिंह मेहरा 'मधु', जुगलकिशोर पेटशाली, शिवचरण पाण्डे (लक्ष्मी भण्डार), श्री आनन्द सिंह बिष्ट 'बूदी' एवं छनजर सभा का मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रो. दिवा भट्ट जी एवं प्रो. देवसिंह पोखरिया जी ने इसको संवारने में जो परिश्रम किया, उसके ऋण से उऋण होना मेरे लिए सम्भव नहीं।

"उसके कठिन परिश्रम से ही
स्वेत-स्वेत मुसकाता होगा
माटी का कण श्रम से मिलकर
सोने में ढल जाता होगा।"

इसे उसी को समर्पित करता हूँ। हमारे ग्रामीण समाज रूपी शरीर में वही प्रमुख नाड़ी है।

- राजेन्द्र बोरा (महंत त्रिभुवनगिरि)

Scanned with CamScanner

'क्या पहचान प्रिया की होगी'

एक उत्कृष्ट आंचलिक खण्डकाव्य

राजेन्द्र बोरा/महन्त त्रिभुवन गिरि महाराज कृत 'क्या पहचान प्रिया की होगी' नामक प्रस्तुत खंड काव्य हिन्दी काव्य परम्परा की 'संदेश काव्य' या 'दूत काव्य' परम्परा का काव्य है। भारतीय साहित्य में कालिदास के 'मेघदूत' से लेकर अब्दुर्रहमान के 'सन्देश रासक' और नन्ददास एवं सूर 'रत्नाकर' आदि के 'भ्रमरगीत' से लेकर 'हरिऔध' के 'प्रिय-प्रवास' तक प्रकृति के विविध उपादानों को दूत बनाकर अपने प्रिय या प्रिया तक संदेश पहुंचाने की परम्परा मिलती है। प्रस्तुत 'दूत काव्य' केवल प्रवासी और प्रोषितपतिका के एकाकी विरह से संबंधित न होकर उन सब प्रवासियों की पीड़ा को व्यक्त करता है, जो अपना जन्म स्थान छोड़कर रोजी-रोटी के लिए परदेश में प्रवास कर रहे होते हैं। कवि दार्शनकि अन्दाज में पर्वतीय प्रवासी की अनन्त पीड़ा को व्यक्त करता है। जो अपना जन्म स्थान छोड़कर रोजी-रोटी के लिए परदेश में प्रवास कर रहे होते हैं और कहता है कि युग-युगों से पहाड़ के प्रस्तर खण्ड मौन भाव से इस पीड़ा को सहते आये हैं। प्रवास की पीड़ा इतनी दुःस्सह और दुर्वह है कि वह अपने पराये का भेद मिटा देती है। यह व्यथा किससे कही जाये, कैसे कही जाये और किस प्रकार कही जाये, यह बात प्रवासी को समझ नहीं आती। प्रवासी प्रिय को एक ऐसा सन्देश-वाहक चाहिए, जो उसकी प्रिया तक उसका सन्देश पहुँचा दे। उदर की आग ने जिस प्रवासी को बटोही बना दिया, वह कफुवा (पर्वतीय पक्षी), मोनाल पक्षी और पवन के माध्यम से अपना सन्देश प्रिया तक पहुँचाना चाहता है। इन तीनों से वह एकालाप सा करता जाता है और पूरे पर्वतीय जीवन को जी जाता है। इस संदेश के बहाने कवि पर्वतीय जीवन के अभावों, कष्टों, कठिनाइयों, समस्याओं और पलायन आदि के साथ ही प्रवासी जीवन की समग्र व्यथा को उजागर कर देता है। वह कफुवा, मोनाल और पवन के सामने अपने हृदय का समस्त दर्द उड़ेल देता है। अपनी प्रिया का मुँह अँधेरे से रात्रि पर्यन्त कर्मरत सर्वांग चित्रण कर डालता है। वस्तुतः इन तीनों के माध्यम से सन्देश भेजते-भेजते प्रवासी कवि स्वयं

Scanned with CamScanner

अपने जन्म स्थान अपने पर्वत प्रदेश में पहुँच जाता है। उसका अपनी प्रिया से स्वर्गिक मिलन होता है। हवा, चाँद और तारे इस मिलन के गवाह बनते हैं और प्रिय और प्रिया पक्षियों की तरह उन्मुक्त गगन में विहरण करते हैं। जितना दुःख, जितनी पीड़ा, जितना अवसाद प्रवास पर्यन्त प्रिय और प्रिया झेलते हैं, उस सब का अन्त सुखद मिलन में होता है। इस प्रकार यह खंडकाव्य उदात्त विरह काव्य के साथ सुखान्त है। इस काव्य का प्रारंभ करते हुये कवि कहता है-

"कौन सुने क्यों देखे कौन,
कौन पराया, अपना कौन।
ऊँचे-ऊँचे शिखर क्या सुनें,
दुंग-पाथर युग-युग से मौन।"

समस्त दैनन्दिन कार्यों को सम्पादित करती, शीत का हड़कम्प और ग्रीष्म की तपन झेलती, हिचकियों से प्रिय को याद करती, वृद्ध सास-ससुर की सेवा करती, बच्ची की देखभाल करती, सुबह से सायं तक गृहस्थी के सभी कार्यों को संभालती और सुबक-सुबक कर रोती, कर्म निरता उस प्रिया के स्मरण मात्र से प्रिय विह्वल हो उठता है और घुघुती पक्षिणी के सम्मुख आ पड़ने पर उसके हृदय का उद्वेग द्विगुणित हो उठता है। वह एक साख पर बैठे कफुवा पक्षी को सम्बोधित करते उससे अपने सुख-दुःख बांटने की बात करता है-

"सुनो-सुनो हे सुहृद पंछी,
पल दो पल को सखा बना लो।
इक दूजे से दुःख सुख बाँटें,
बात कहो कुछ मुझे सुनो तो।"

कफुवा पक्षी की वाणी उसके तन-मन में आग लगा देती है, पर इसके साथ ही यह विश्वास भी जगाती है कि प्रवासी का अपने प्रिय से मिलन अवश्य होगा-

"कफू-कफू की रटन तुम्हारी,
तन मन आग लगा देती है।
मिलन एक दिन होगा प्रिय से,
रह-रह आस जगा देती है।"

फिर वह कफू की जोड़ी को देखकर हृदय विदारक व्यथा से

Scanned with CamScanner

चीत्कार कर उठता है। उस पक्षी के उड़ जाने पर जहाँ उसके स्वर वन-वन में गूँजते हैं, उसका मन उसी पर्वत प्रदेश की ओर चला जाता है। उसके स्वप्न धूमिल पड़ने लगते हैं। अब उसकी कुशलता की गठरी कौन प्रिया तक पहुँचायेगा। यादों के हार मुरझाने लगते हैं और प्रवासी निराश और हताश हो जाता है-

"सकल पदारथ सम्मुख मेरे,
किंतु प्राप्ति का योग नहीं है।
या कि श्राप है किसी भूल का,
मनवांछित क्यों भोग नहीं है।।"

एक और पर्वतीय पक्षी मोनाल के सम्मुख आने पर वह उससे अपनी प्रिया का हाल पूछने लगता है। उसका हृदय बंध टूटने लगता है। वह मोनाल से अपनी प्रिया को संदेश दे आने का निवेदन करता है या फिर मोनाल से अपने पंख देने की बात करता है, जिससे वह अपनी प्रिया के दर्शन कर सके; पर मोनाल भी फुर्र से उड़ चलती है। राग और विराग के बीच झूलता कवि का प्रवासी मन आशा की डोर को नहीं छोड़ता है, तभी वह मृत्यु को चेतना देकर प्राण का संचार करने वाली पवन का दामन थामता है और उससे अनुरोध करता है-

"जाकर प्रिय के देश सुनो ना,
ज्योति कलश छलका आओगी।
बिखर गये जो मन के मोती,
बहना उन्हें पिरो आओगी।
सुनो पवन बहना क्या मेरा,
संदेशा तुम दे आओगी।"

प्रवासी को रह-रहकर पर्वत के कण-कण की माटी की सौंधी सुगन्ध याद आती है। पेड़-पुष्प, लता, नदी, बाट-घाट, गाय-भैंस, पशु, सघन वन, छलछलाते गधेरे, पर्वत-झरने, शिखर, ताल-पोखर, तीर्थ-मंदिर, प्रातः, मध्याह्न, सायं के दृश्य, वेद-वाणी का उच्चार, देहरी पर बैठी बूढ़ी अम्मा, प्रवासी की राह तकते वृद्ध पिता, आँगन में थिरकती बिटिया, घूंघट में प्रियतम के मिलन के पलछिन गिनती प्रिया सभी कुछ एकबारगी चलचित्र की तरह उसकी आँखों के सम्मुख जीवन्त हो उठते हैं। प्रिया के बहाने पहाड़ी नारी का समूचा जीवन अपने समस्त

Scanned with CamScanner

अभावों और संपूर्ण यथार्थ के साथ चित्रित हो उठता है। पहाड़ी लोक जीवन का सर्वांग दर्शन हमें इस काव्य में मिलता है।

प्रवास पर गया व्यक्ति यादों के सहारे विवशता में अपना एकाकी जीवन व्यतीत करता है। भीड़-भरे प्रदेश में वह अकेला है- केवल अकेला; जहाँ अपना कोई नहीं। एक रंगमंच के पात्र की तरह वह अपना अभिनय मात्र करता है। नकली मुखौटा लगाये अपने असलीपन पर रोता है। प्रात: आती है जाती है, दुपहरी ढल जाती है, थकी-थकी सन्ध्या भी आ जाती है और फिर रात उसे अपने आगोश में ले लेती है। पर याद उसके मन से जाती नहीं।

इस काव्य में उभयपक्षी विरह मिलता है। उसकी प्रोषितपतिका प्रिया भी प्रिय की याद में कम व्यथित व आतुर नहीं है। आशा-निराशा में झूलती रातदिन काम करती, पारिवारिक जनों की सेवा करती विरहणी का विरह दबा-दबा सा है, सिसका-सिसका सा है। अपने तनमन का ध्यान तो उसे तभी आता है, जब आधी रात को वह गुदड़ी वाली खटिया पर जाती है और अपने पांवों की विवाइयों को लीसे से टालती है। कवि की कर्म निरता, कर्तव्यपरायणा, प्रिया का विरह भी कर्मठ है। कवि कुलगुरु कालिदास के 'मेघदूत' की यक्ष के विरह में क्षीणकाय यक्षिणी की भांति उसके कंगन हाथ से नहीं गिरते, अपितु उन हाथों में सदा कुटेला, दनेला और हँसिया दिखाई पड़ता है।

घुँघरू लगे दराँती की रुनझुन के साथ घास काटती, नदी तट के पत्थर पर बैठकर गीत गाती, नदी के पानी को पावों से छलकाती, अस्त-व्यस्त धमेली और बूटों वाला पिछौड़ा ओढ़े और हरा घाघरा पहने उसका सौन्दर्य समूची पर्वत बालाओं का सौन्दर्य बनकर निखर उठता है। प्रवासी कई चाक्षुष बिम्बों के माध्यम से पवन को अपनी प्रिया की पहचान बताते हुये कहता है-

"-झूम रही होंगी जब फसलें
क्या बहार आ जाती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं,
क्या पहचान प्रिया की होगी।
एक बूँद श्रम जल से उसके
सौ-सौ रंग बरसते होंगे।

क्या पहचान प्रिया की होगी

Scanned with CamScanner

अमृत जल छलका धरती में
नवल चेतना भरते होंगे।''

सिर पर खाद भरा डाला, पीठ पर पिरूल का जाल समेटे, गोबर सने हुये हाथ-पाँवों वाली, भरी-दुपहरी घरवन एक लगाती, अभावों को दवा बनाती, मंगल कार्यों में कर्तव्य-पूर्ण मुख-मंडल वाली, जग के आगे हँसती-मुस्कराती, भीतर-भीतर रोती, ओखली कूटती, चक्की पीसती, बिटिया को लोरी गा थपकाती, आँचल में छुपाती, गाय-भैंसों को घास देती, घुघुती से प्रिय का पता पूछती, विरह की तपस्या करती, संघर्षों में तपती, पत्थर-पत्थर पूजती, देवताओं की मनुहार करती, घायल हृदय, शीत की ठंडक, ग्रीष्म की तपन, वर्षा की फुहार, बसंत की मधुरिमा झेलती, फाग के राग में विरागी, आँसुओं से चौक पुराती, प्रियतम के आगमन की प्रतीक्षा में मन का थाल सजाती, ज्योत्स्ना पूर्ण रातों में झोड़ा चाँचरी लोकगीत गाती, ऋतुओं के अनुसार विभिन्न पशु-पक्षियों की बोली से आहत होती, सावन में भीगती, वर्षा से बचने के लिए उड्यिार में बैठी, बिजली की चमक से धक-धक हृदय वाली, धान-मादिरा के खेतों में जवाकुसुम सी दीपती, बुग्यालों एवं मखमली कालीनों में कस्तूरा मृगी-सी कुलांचे भरती, पर्वत बाला के सैकड़ों बिम्ब इस काव्य के वैशिष्ट्य को सिद्दत से सर्वांगता प्रदान करते हैं। उस ज्योतिर्मयी सुन्दरी का चित्रण करते हुए विरह कातर प्रवासी प्रिय का मन नहीं अघाता है, वह फिर-फिर कहता है-

''सुनो-सुनो झाँवर की रुन-झुन
वीणा की झनकार सरीखी।
कैसा सुन्दर रूप, वसन है
छायी है वह नवल वधू सी।
सच में देखो ज्युनाइ रंग में
अभी नहा कर आई होगी।
देखो-देखो बहना इसको,
यह पहचान प्रिया की होगी।''

इस काव्य में मरण को छोड़कर, अभिलाषा, चिन्ता, गुणकथन, स्मरण-प्रलाप, उद्वेग आदि सभी विरह दशाओं का चित्रण हुआ है। प्रकृति अपने मनोहर और कठोर दोनों रूपों में चित्रित हुई है। प्रतीक और

Scanned with CamScanner

बिम्बविधान काव्य में आद्यन्त विद्यमान हैं। प्रकृति के कई रंग विविध रूप में इस काव्य में निखर आये हैं। कहीं-कहीं एक शब्द मात्र पूरी चाक्षुष प्रतीति करा जाता है। प्रकृति के वैभव का कवि ने निजता से चित्रण किया है। अपनी प्रेयसी के लिए ग्राम्या, करुणे, सुमना, शुभागा, महाभागा, सुवा, पाँखी, भ्रमरी आदि कई विशेषणों का प्रयोग किया है। प्रकृति का आलम्बन चित्रण करते हुये कवि वेदों के रचना स्थल की मान्यता भी स्थापित करता है। कवि का मातृभूमि प्रेम व जन्मभूमि प्रेम दर्शनीय है-

"वही वेदनी, रचे गये थे वेद जहाँ पर
पतित पावनी भागीरथी भी हुई प्रवाहित।
आदि पुरुष मनु ने भी चिन्तन वहीं किया था,
वहीं हिम शिखर सबसे ऊँचा विश्व मकुट है।
गंगा यमुना सरस्वती तीनों से सिंचित,
शिव अलकों सी कोटि कोटि बहती सरिताएं।
हरण कर रही कलि मल का जो युगों युगों से
वही हमारी देव भूमि उत्तराखण्ड है।"

काव्य नायिका का अग्रांकित सौन्दर्य मंडित चाक्षुष बिम्ब किसी कवि की कल्पित कोमल मधुर भावना-सा हृदय में एक अमिट छाप छोड़ देता है-

"रंगोली के बुट्टों वाला उसका लाल पिछौड़ा होगा,
हरा घाघरा हरियाली का रंग वहीं बिखराता होगा।
पूनम की चंदा सी झूली उसके नाक नथूली होगी,
किसी कवि की कल्पित कोमल मधुर भावना जैसी होगी।।"

इस काव्य में 'बारह मासा' का क्रमबद्ध वर्णन तो नहीं मिलता, किन्तु षड्ऋतुओं और विशेषकर पर्वत की तीन ऋतुओं-शीत, गीष्म और वर्षा का विशेष चित्रण हुआ है। इन ऋतुओं के साथ ही विभिन्न लोकाचार, उत्सव, मेले और ऋतु के अनुरूप विरही मन की परिवर्तित मनः स्थितियों का सूक्ष्म चित्रण काव्य में विद्यमान है। इस विरह के मूल में जो विडम्बना है, वह है- पहाड़ों का पानी और जवानी दोनों ही पहाड़ के नहीं होते हैं। यह नियति को भी मंजूर नहीं। इस काव्य के बहाने पहाड़ की इन समस्याओं पर कवि ने गहन चिन्तन किया है-

Scanned with CamScanner

"किन्तु विडम्बना तो देखो उस धरती की तुम,
जहाँ पानी और जवानी बहती ही जाती है।
यही नियति ने क्या मेरे भी नाम कर दिया,
कभी-कभी मैं यही सोचता रह जाता हूँ।।"

आशा और निराशा के बीच से कवि ने जीवन के सत्यों को समुद्घाटित किया है। इसीलिए कहीं-कहीं दार्शनिकता की भी झलक काव्य में मिल जाती है।

"मुट्ठी बन्द लिये आये हैं,
अपना-अपना भाग बंधाए।
देश विराना छोड़ के जाना,
इक दिन होंगे सभी पराये।
बैलिया-आज-मोल का क्रम है,
एक दिन यह क्रम कट जायेगा।
साँसों की डोरी खिंचते ही
मन का कटु भ्रम छंट जायेगा।"

पहाड़ के कष्टप्रद जीवन में रात-दिन खटती खपती, गृहस्थी संभालती काव्य नायिका सौन्दर्य की यथार्थ सौंधी गंध से अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। वह प्रकृति से अठखेलियाँ करती किसी परी लोक की अप्सरा से कम सुन्दर नहीं है-

"एक दमकता उसका आनन,
एक जून गगनांगन झूली।
एक इन्दु जल में है उतरी,
एक झूलती नाक नथूली।।
गङ्गलोड़े पर बैठ नदी तट गीत सलौना गाती होगी,
और गाड़ के मृदुपानी को पैरों से छलकाती होगी।।"

इस प्रकार कवि भावों के सूक्ष्म सूत्र में सौन्दर्य एवं कथा के मोती पिरोता इस काव्य की लड़ी का निर्माण करता है। प्रिया की पहचान के लिए उसने तमाम लोक व्यंजक उपमानों का सटीक हृदयसम्वेद्य उपयोग किया है। सर्वाधिक वैशिष्ट्य इसका भाषा प्रयोग है। कुमाउनी के सैकड़ों शब्दों और पदों का हिन्दी के साथ मिश्रित प्रयोग कर कवि ने इसे विशिष्टता प्रदान की है। कुमाउंनी शब्दों की सम्यक जानकारी के बिना

Scanned with CamScanner

इस काव्य के मर्म तक पहुँचना थोड़ा कठिन है। कुमाउनी की खसपर्जिया बोली के ढुङ, पाथर, नराई, बाटुली, कुकैली, घुघुती, घुर-घुर, रैबार, उदेख, कफू, ज्वल्त, हौसी, मनसुप, पुन्तुरी, झट, भेटुई, निंगुरी, अटक, प्यूरूड़ी, मोहिली, सुवा, ट्वल, छण-छण, दण-दण, लाटी, छलबलाट, दिखण छाण, गंङ्गलोड़, धकधक, बैणा, ब्याल, बाली, पिरूल, द्गड्याणू, टल्याना, कुचकुची, मुखतिर, झिटघड़ी, गुन-गुन, इकलकटू, फोचिना, बौवा, छिहाड़ी, छुणुक, दैण, ह्यून, ऐन-मैन, खाव, रुङतुङान, उड्यार, बुग्याल, खचैक, कलकली, निःसास, ह्यूंवारी, गढ़इ, बक्तार आदि शब्दों की अभिव्यंजना शक्ति से वही व्यक्ति परिचित हो सकता है, जिसका कुमाउनी भाषा पर अधिकार हो। केवल शब्द और पदों का ही नहीं, कुमाउनी मुहावरों व कहावतों का भी पर्याप्त प्रयोग इस काव्य में हुआ है। मन सुप लगना, निःसास से भरना, ठौणि लगना, किट-किट दाँत बजना, कलकली लगना, कौव-मौव लगना, तिक-तिक करना, डौंरि खेलना, चाल चमकना, रुण-भुण दिन आना, ठंडी पड़ना, घुन-मुन टोपि रहना, कठकिड़ जैसी, माघ मुचा तो मौनि मुच गई, अंसुवन चौक पुराना, काफल पाकौ मैलि नि चाखौ, पूरहैं पुतई पूर्ण-पूर्ण हैं, उचैण रखना, चिङान होना, सुरमई-सुरमई सांझ पड़ना, घुरड़ काकड़ कैं चाँट्ठै प्यार आदि मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग भाषा में अर्थ गौरव, लाक्षणिकता और व्यंग्यार्थ की सृष्टि करता है। भाषा में बिम्बात्मकता एवं चित्रात्मकता का पूर्ण गुण विद्यमान है। कई ध्वन्यर्थ- व्यंजक शब्दों का प्रयोग भी कुमाउनी भाषा की विशिष्टता को द्योतित करता है। भाषा में पहाड़ी नदी जैसी प्रवाहात्मकता और प्रभविष्णुता है। कुमाऊँ अंचल के आंचलिक शब्द प्रयोगों, क्षेत्रीय भौगोलिक एवं प्राकृतिक दृश्यों, लोकाचारों और सामाजिक एवं दैनन्दिन कार्यों के चित्रण की प्रधानता के कारण इस काव्य को 'आंचलिक खंड काव्य' की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसमें आद्यन्त, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि सादृश्य मूलक अलंकारों की छटा सर्वत्र विद्यमान है। शब्दालंकार भी पर्याप्त हैं। अलंकार-प्रयोग सहज और स्वाभाविक है। इस काव्य की एक अन्य विशेषता इसकी गेयता है। इसे प्रारंभ से अंत तक गाया जा सकता है। छंद प्रयोग की दृष्टि से इसमें चौपाई, चौबोला, ताटंक, सार, पद्धरि,

Scanned with CamScanner

पादाकुलक, पद-पादाकुलक, मनोरमा, माधव-मालती, रोला, समान सवैया, पीयूष निर्झर आदि मात्रिक छन्दों और कुमाउनी के न्यौली नामक (चौदह वर्णों के) एक वर्णिक छन्द का प्रयोग हुआ है। कुछ छन्द त्रिपाद (तीन पंक्तियों) में भी विन्यस्त हैं, कहीं अंत्यानुप्रास राहित्य भी है। कहीं-कहीं लय में मात्रागत त्रुटियां भी आ गयी हैं। ताटंक या लावनी तथा मनोरमा का प्रयोग इस काव्य को लोक काव्य की लय भूमि पर खड़ा करता है। ताटंक के साथ कहीं-कहीं वीर छन्द (31 मात्राएं) के चरण भी आ गये हैं। किसी पद में एकाधिक छंदों की लय भी विद्यमान है, यह कवि के छंद-कौशल का परिचायक है, यथा-

फिर उन्हीं निष्ठुर पवन, शशि, तारकों ने। (23 मात्राएं, रजनी छन्द)
खट खटाये द्वार ये क्या कर रहे हो? (21 मात्राएं, पीयूष निर्झर)
स्वप्न से जागे से देखा रात का आँचल था फैला। (24 मात्राएं माधव मालती)
उड़ चले हम पखेरु बन फिर गगन में। (24 मात्राएं पीयूष निर्झर छन्द)

अतः कहा जा सकता है कि भाषा, भाव और शिल्प की दृष्टि से यह उत्कृष्ट एवं सशक्त काव्य रचना है।

हिन्दी में इस रचना का इन अर्थों में विशिष्ट महत्व है कि प्रवास पर गये पति अथवा प्रिय की अनन्त प्रतीक्षा करती काव्य नायिका अकेली नहीं, बल्कि सम्पूर्ण पर्वतीय पोषितपतिकाओं का प्रतिनिधित्व करती है और प्रवासी प्रिय उन सभी प्रवास पर गये पहाड़ी युवकों का प्रतिनिधित्व करता है, जो पेट की खातिर घर से दूर पराये देश में बेगानी जिन्दगी जीता है। राजेन्द्र बोरा ने 'क्या पहचान प्रिया की होगी' के बहाने अपनी हृदयस्थ समस्त भावनाओं को अनुभूति की गहराई और यथार्थ की कठोरता के साथ इस काव्य में उड़ेल दिया है। साथ ही भावचित्रों को बूँद-बूँद, शब्द-शब्द उकेर कर पाठक के सम्मुख रख दिया है। जैसे-कवि कविता न कहकर कोई चित्र बनाता जा रहा हो और उस चित्र-वीथि में पाठक को दर्शक बनाकर घुमा रहा हो। यह काव्य शिल्प की बारीकियों से बुना गयां है। आशा है, यह खंडकाव्य पर्वतीय प्रवासी और प्रोषित पतिका का कंठहार बनेगा एवं हिन्दी काव्य जगत में समादृत होगा।

★ प्रो. देवसिंह पोखरिया
अध्यक्ष हिंदी विभाग
कुमाऊँ वि.वि., एस.एस. जे. परिसर, अल्मोड़ा

Scanned with CamScanner

प्रिया की पहचान

कालीदास कृत मेघदूत काव्य के यक्ष की भाँति इस रचना के विरही नायक की पीड़ा भी उन समस्त पर्वतीय प्रवासियों की पीड़ा बन जाती है; जो अपने आत्मीय संबंधों से भरे-पूरे घरों-परिवारों और रमणीय पर्वतों को छोड़कर रोजी-रोटी की खोज में दूर के मैदानी शहरों में जाकर वहाँ की भीड़ में एकाकी संघर्ष करते हुए अपने स्वजनों से मिलने के लिए छट-पटाते रहते हैं और उनकी चिन्ताओं में घुलते रहते हैं। इन आत्मीय स्वजनों के केन्द्र में वह प्रियतम है; जो स्वयं भी विरहाग्नि में झुलसती रहती है किंतु व्यथा में रोते-बिसूरते पड़े रहने के बदले पति की अनुपस्थिति में उसके सभी दायित्वों को स्वयं संभाल लेती है। बच्चों से लेकर वृद्धों तक का पालन-पोषण, सेवा-सुश्रुषा; चूल्हे-चक्की से लेकर खेतों-वनों और गौशाला के कार्यों को पूरा करती वह सतत अपने प्रियतम की प्रतीक्षा करती रहती है। पति की यादें उसे दायित्व निर्वाह की ऊर्जा देती हैं और दायित्वों के निर्वहन से उसकी विरह-व्यथा उदात्तीकृत रूप में समष्टि तक विस्तार पाती है।

उसी प्रिया तक अपने हृदय का संदेश पहुँचाने के लिए नायक किसी संदेशवाहक को ढूँढ रहा है। ऐसा संदेशवाहक; जो उसकी भावनाओं को तो समझे ही, साथ ही पहाड़ों और वहाँ के प्राणियों के जीवन से भी परिचित हो। ''उदर अग्नि ने मुझे बटोही बना दिया था लाचारी में'' कहता हुआ वह अपने जैसे ही किसी प्रवासी को ढूँढता है तो उसे एक प्रवासी पक्षी मिल जाता है जो अचानक कहीं से उड़कर उसके पास आ बैठता है। मैदानों से पहाड़ों की ओर लौटते उसी पक्षी को अपना हमदर्द मानकर कहता है -

''जहाँ तुम्हारे मधुर स्वरों से, कफुवा-कफुवा गूँजे वन-वन
मेरा भी तो देश वही है, उसी देश को उड़ जाता मन।''

यक्ष के संदेशवाहक मेघ को रास्ता पता नहीं था। यहाँ इसके सामने ऐसी समस्या नहीं है लेकिन समस्या यह है कि वह उसे पहचानेगा कैसे? किसे संदेश देगा? उन पर्वत शृंखलाओं के बीच बसे अनेक घरों में अनेक विरहिणियाँ रहती हैं। प्रियतम का संदेश तो उसकी अपनी ही प्रियतमा तक पहुँचाना है। इसलिए उसकी निजी पहचान तो बतानी ही पड़ेगी। एक विरहिणी की विशेषताएं बताते-बताते कवि वैविध्यपूर्ण सौंदर्य सम्पन्न पर्वतीय पृष्ठभूमि में आर्थिक, सामाजिक और मानसिक

Scanned with CamScanner

संघर्षों से जूझती अपनी सुंदरी का जो अंकन करता है, वह पर्वतीय नारी का समग्र चित्र बनकर उभर आता है। तब यह विरह-काव्य मात्र विरह काव्य न रहकर पहाड़ की कठिन जीवन चर्या तथा यहाँ के युवाओं के अप्रवासी बनने की विवशताओं एवं तज्जनित पीड़ाओं-समस्याओं को भी उजागर करने लगता है।

नगर की भीड़ में अकेला पड़ा ग्रामीण युवक अपने को हमेशा परदेशी सा अनुभव करता है। यहाँ के कृत्रिम जीवन और आपाधापी में सदैव अजनबी ही बना रहता है।

इतनी बड़ी भीड़ में खोया वैसे कोई क्या पाएगा।
अद्भुत है माया की नगरी प्राणी भटका रह जाएगा।
पता नहीं कोई क्या चाहे किस तृष्णावश दौड़ा जाए।
मिले ना मिले इन हाथों को हाथ पसारे वापस जाए।
एक पात्र हूँ मैं भी इनमें रंगमंच पर प्रस्तुत होता।
नकली एक मुखौटा ओढ़े अपने असलीपन पर रोता।

दूसरी ओर वह विरहिणी यादों में भीगी-भीगी पूरा भार वहन करती है। घर-बाहर के कार्यों के चक्र में घूमती उसे तो बैठ कर बिरहा गाने की भी फुर्सत नहीं -

कभी दनेला कभी पटेला लगने से रह जाता होगा।
उधरा भीड़ा किसी खेत का चुनने से रह जाता होगा।।

नायक यह सब जानता समझता है। इसीलिए उसका स्नेह विश्वास और भी गहरा हो जाता है-

उसके कठिन परिश्रम से ही खेत-खेत मुस्काता होगा,
माटी का कण श्रम से मिल कर सोने में ढल जाता होगा।
गोबर माटी सने हुए पग श्रमगंधा बिखराते होंगे।
भरी दोपरी घाम चूटते घर-वन एक लगाते होंगे।

यादों की कसक में नायिका के स्नेह-सेवा-श्रम और समर्पण की छवि मिलती है तो मन उसके प्रति नतमस्तक हो जाता है। उसके कष्ट अनेक हैं और कष्टों के उपाय भी कभी पारम्परिक तो कभी सर्वथा मौलिक हैं-

फिर दिसाँण जाने से पहले अपनी सुधि में आती होती,
छ्यूल जला मरहम लीसे से अपने पैर टल्याती होगी।
सुन्दर पलंग पर मुलायम आरामदेह बिस्तर के स्थान पर मिट्टी के

Scanned with CamScanner

फर्श पर बिछा गुदड़ी का दिसांण उसको अधिक आराम और सुख की नींद देता है। क्योंकि उस थकी हुई देह को उसी सहज सादगी में अपनापा मिलता है। समय और औषधि के अभाव में वन से लाये हुए चीड़-वृक्ष के रस 'लीसे' से अपनी बिवाइयों को भरती वह सदा अपनी सभी समस्याओं के उपाय स्थानीय परिवेश में ही ढूँढती है। सब उपाय व्यर्थ हो जाने पर स्थानीय देवी-देवताओं की शरण में जाती है। नायक को भी तो उन्हीं पर विश्वास है-

गोलू गंगा, सैम औ भोलज्यू रखवाली सब करते होंगे
छुरमल, हरू, ऐड़ि व मुमिया, दैण सदा ही रहते होंगे।

नायक-नायिका के इन विश्वासों के चित्रण द्वारा कवि स्थानीय देवी-देवताओं का परिचय भी कुशलता पूर्वक करा देता है।

इन व्यस्तताओं के बीच कभी-कभी फुर्सत मिलने पर वह अपनी बिरह-व्यथा सुनाने का अवसर भी खोज ही लेती है। तब उसके रूप-सौंदर्य का एक अद्भुत बिंब उभरता है-

सुनो गैल पातल सखियों संग घास काटने जाती होगी
और दराती छुणुका-छुणुका अपना दुखड़ा गाती होगी।

उसकी संवेदनाएं जब उसके मधुर स्वर का आधार लेकर गीत के रूप में मुखरित होती हैं तो पूरे वन प्रान्तर का दृश्य-श्रव्य सौंदर्य एकमेव हो जाता है-

गडलोड़े पर बैठ नदी तट गीत सलोना गाती होगी
और गाड़ के मृदुपानी को पैरों से छलकाती होगी
उसकी कटि की मटक मनोहर, नागिन लटी लटकाती होगी।
अस्त-व्यस्त-सी गुंथी धमेली बलखाती लहराती होगी।
रंगोली के बुट्टों वाला उसका लाल पिछौड़ा होगा
हरा घाघरा हरियाली का रंग वहाँ बिखराता होगा।

नायिका के ये विभिन्न बिंब नायक के मन में स्थायी रूप से अंकित हैं। इन्हें मन से हटा पाना असंभव है। एक ओर सुकोमल मनमोहक रूप लावण्ययुक्त नायिका की कठिन-कठोर दिनचर्या का यथार्थ है तो दूसरी ओर अपने परिवेश से कटकर शहर की भीड़ के बीच अकेले पड़ गये नायक का जीवन इन स्थितियों पर खिन्न होते-होते कई बार वह दार्शनिक ढंग से कहने लगता है -

क्या पहचान प्रिया की होगी

Scanned with CamScanner

कौन सुने, क्यों, देखे कौन, कौन पराया अपना कौन
ऊँचे-ऊँचे शिखर क्यों सुनें, ढुङ् पाथर युग-युग से मौन।

इसी उदासी से काव्य की शुरूआत होती है कि अपनी व्यथा किसे सुनाएं। व्यथा सुनाते-सुनाते नायिका और पूरा पहाड़ अपनी समस्त विशेषताओं के साथ साकार हो उठता है। वही काव्य को अविस्मरणीय बनाता है।

विरह गाथा शाश्वत सत्य है। हजारों युगों से हजारों रूपों में कही गई है, कही जाएगी। इस काव्य को अविस्मरणीय बनाने में इस विप्रलंभ के अतिरिक्त भाषिक अभिव्यंजना की बहुत बड़ी भूमिका है। हिंदी की रचनाओं में कुमाउँनी शब्द प्रयोगों का संमिश्रण भाषा को आँचलिक सुगंधों से समृद्ध करने के साथ-साथ कुमाउँनी भाषा को भी नया विस्तार देता है तथा आँचलिक वातावरण को भी यथार्थ और सहज प्रतीति कराता है। गैल पातल, दराती छुणुकाना, ढुङ्ग-पाथर, गङ्लोड़े पर बैठना, लीसे से पैर टल्याना जैसे अनेक प्रयोग इसी उद्देश्य से सायास किये गये हैं। राजेन्द्र बोरा की यह एक प्रमुख विशेषता रही है कि वे कुमाउँनी भाषा-प्रयोगों का हिंदी करण करके भाषा को अधिक स्वाभाविक बनाते हुए अधिक जीवन्तता, बिम्बग्राहकता और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। निरन्तर जल-प्रवाह से घिस-घिस कर गोलाई प्राप्त कर चुकी शिलाओं के लिए गङलोड़े से अधिक सार्थक शब्द कोई हो ही नहीं सकता। उस पर बैठकर नदी के जल को पैरों से छलकाती नायिका का दृश्य बिंब पूरी प्राकृतिक पृष्ठभूमि के साथ साकार होता है तो 'दातूली छुणुकाती होगी' में घुंघरू लगी दराती की मृदु ध्वनि कानों में गूंजने लगती है।

'क्या पहचान प्रिया की होगी' का नायक अपने संदेशवाहक को भौगोलिक पथ निर्देशित नहीं करता; वरन् अपनी प्रिया के पहचान चिह्न बताता है। इन्हीं विशेषताओं के चिह्नीकरण में पर्वतीय जीवन की समस्त कर्मठताओं, विवशताओं और व्यथाओं को भी कह बैठता है। तब लगता है कि पहाड़ के प्रत्येक शिखर, प्रत्येक घाटी में, हर घर, हर खेत में यही कर्मनिरत विरहिणी बैठी हुई कोमल हृदय और घायल थके अंगों के साथ अपने परदेशी प्रियतम की प्रतीक्षा कर रही है।

– दिवा भट्ट

Scanned with CamScanner

क्या पहचान प्रिया की होगी ?

कौन सुने क्यों, देखे कौन,
कौन पराया अपना कौन।
ऊँचे -ऊँचे शिखर क्या सुनें
ढुंङ-पाथर युगयुग से मौन।।

अपनी बिथ है, किससे कहनी,
उस तक पहुँचायेगा कौन।
अब तेरे अन्तर्वासी को,
चुपचुप रखना होगा मौन।।

मैंने तो बस सोचा था यह,
जल्दी वापस आना है।
मुझे क्या पता अपने हाथों,
पथ अपना उलझाना है।।

उदर अग्नि ने मुझे बटोही,
बना दिया था लाचारी में।
ओह! अभावों से लड़ने को
जीवन की मारा मारी में।।

सुनो शुभे! बस चार दिनों की
बात समझलो, मैं आता हूँ।
नील कमल से नयन तुम्हारे
छवि अपनी मैं भर जाता हूँ ।।

लगे नराई जब भी मेरी
बाटूली तुम मुझे लगाना।
हँसी खुशी दो दिन कटने हैं
मैंने तो वापस ही आना।।

Scanned with CamScanner

और सुनो ये इज औ बाज्यू
दोनों ही अब वृद्ध हो चले।
ना साधन ना संबल बाकी
मार्ग सभी अवरुद्ध हो चले।।

उनकी सेवा और सुश्रूषा
तुमने करनी सुनो सयानी।
और साथ ही,सुनो न रोओ
सभी गृहस्थी तुम्हें निभानी।।

मेरे इतना कहने भर से
ढुलक गये लड्डू आँखों से।
लिपट गई यों, ज्यों लिपटी हो
अमर बेल कोई शाखों से।।

क्यों जो कह बैठा मैं इससे
स्वयं कुकैली मुझे लग पड़ी।
सुबुक-सुबुक कर रोती थी वो
नयनों से लग गई सतझड़ी।।

कितना करुणे! तुम्हें मनाया
मना मना कर हार गया था।
अविरल बहता नयन नीर भी
रोक नहीं मुझको पाया था।।

किसी तरह धीरज दे पाया
आज किसे मैं यह बतलाऊँ।
धोखा ही क्या दे आया मैं !
इस उलझन से उबर न पाऊँ।।

भीतर दाहक अन्तः ज्वाला
केवल भड़की रह जाती है।
हार गया हो जैसे जीवन
यह आभास करा जाती है।।

Scanned with CamScanner

चार दिवस की बात बताकर
भ्रमित कर गये रटती होगी।
कैसी दुविधा में डाला है
मन की मन में रखती होगी।।

वैसे, पराधीन प्राणी क्या -
सुख की आशा कर सकता है?
सपनों में सोचा देखा जो
क्या सजीव वह कर सकता है?

किससे पूछूं आज प्रश्न यह
कौन ग्रन्थि मेरी सुलझाये।
कोई करुणाकर बन आये
इस अंधे को राह सुझाये।।

सोच रहा था मिल जायेगा
और भाग्य ने भेज दिया लो।
फुर्र कहाँ से उड़कर आई
सपन हुए साकार समझलो।।

कहो घुघूती! यहाँ कहाँ से,
कब आई तू कैसे आई ?
घुर-घुर बन्द करो अपनी ये,
या तुमको भी लगी नराई।।

प्रिय वियोगिनी तुम भी हो क्या
जल बिन जैसे मीन तड़पती।
या रैबार मिला प्रियतम का ,
गीत मिलन के गाते रहती।।

अरे-अरे कुछ कहे कुछ सुने,
कहाँ उड़ चली सुनो घुघूती।
मुझको भी कुछ बतला देती ,
कौन जतन करूं मैं जुगुती।।

Scanned with CamScanner

तुम पल में ओझल नयनों से,
कहाँ न जाने बिना बताये।
ऐसा क्या है चलन जगत का,
सभी हो गये आज पराये।।

छूट गया सब कितनी जल्दी
सारी कड़ियाँ टूट रही हैं।
उसकी ठौर कहाँ जा खोजूं
अँखियाँ जिसको ढूँढ रही हैं।।

जैसे मैं हूँ यहाँ अकेला -
वह भी वहाँ अकेली होगी।
है उदेख की आग भयावह
दोनों ओर बराबर होगी।।

कैसा चला चक्र यह कैसी
हुई परीक्षा उसकी मेरी।
या फिर अब उसकी औ मेरी
हुई भाग की रेखा टेड़ी।।

यह नगरी कैसी विचित्र है
यहाँ नहीं क्या कोई अपना।
कौन दिशा किस ओर आ गया
मैं जागूँ या देखूँ सपना।।

आज अपरिचित बना खड़ा मैं
सच में कितनी दूर आ गया।
नहीं सगा है ना सम्बन्धी
अनदेखे इस लोक आ गया।।

यहां सभी स्वयं हैं खोये
दूजे से सम्बन्ध नहीं है।
भागे ही जाते हैं सब तो
कोलाहल का अंत नहीं है।।

Scanned with CamScanner

क्या मेरी ही तरह ये सभी
विवश अभावों से लड़ने को।
भाग रहे, मारा मारी में
खोज रहे खोये सपने को।।

मैं ही आतुर भिन्न सभी से
मैं तो सोचूँ मैं ही चिन्तित।
लेकिन ये भी ढूँढ रहे कुछ
सम्भव कुछ हो मन का इच्छित।।

इतनी बड़ी भीड़ में खोया
वैसे कोई क्या पायेगा।
अदभुत है माया की नगरी
प्राणी भटका रह जायेगा।।

पता नहीं कोई क्या चाहे
किस तृष्णावश दौड़ा जाये।
मिले ना मिले इन हाथों को
हाथ पसारे वापस जाये।।

एक पात्र हूँ मैं भी इनमें,
रंगमंच में प्रस्तुत होता।
नकली एक मुखौटा ओढ़े
अपने असलीपन पर रोता।।

नाटक, नौटंकी, मेला है
उसमें उमड़ रहा रेला है।
इसी झमेले में उलझे सब
यही बोझ सबने झेला है।।

कोई अभी-अभी आया है
पहले से कुछ चले आ रहे।
कल कुछ फिर हैं आने वाले
कोई वापस चले जा रहे।।

Scanned with CamScanner

आवागमन निरन्तर गति से
चाक समय का घूम रहा है।
जन-जन यात्री बना हुवा है
जीवन का पथ ढूंढ रहा है।।

कोई माया कोई काया
की चंचल छलना में खोया।
बीच बजरिया बैठा कोई
अपने आँसू पीकर रोया।।

●

प्रथम रश्मि के साथ सदा जो
उषा सुवासित कर जाती थी।
मुक्त रहूँ तम के बंधन से
नूतन आस जगा जाती थी।।

कौन करे पथ ज्योतिर्मय अब
आलोकित वह कर जाती थी
उसके पावन दर्शन पाकर
नवल चेतना भर जाती थी।।

●

Scanned with CamScanner

उन्हीं चोटियों उन्हीं घाटियों
में मेरा बचपन खेला है।
अभी अभी की बातें जैसे-
जीवन भी कैसा मेला है।।

नयनों के आगे यादों की
लड़ियाँ आकर टूट रही हैं।
प्रियतम प्रियतम प्रियतम ही को
व्याकुल अँखियाँ ढूँढ रही हैं।।

●

एक दिन था जब कभी हम
गीत गाते मुस्कुराते।
रात सारी बीत जाती
कल्पना में कहाँ जाने।।

मौन शशि नक्षत्र सारे
बात सब सुनते हमारी।
मुदित मन से जगमगा कर
साथ देते रात सारी।।

और हम दो युगल पांखी
चह-चहाते फड़-फड़ाते
गगन पथ पर गीत गाते
उड़ क्षितिज के पार जाते।।

कहाँ सोचा था ये होगा
क्या नहीं इसने है भोगा।
तब भला क्या करे कोई
दे रहा जब भाग धोखा।।

●

Scanned with CamScanner

अरे दूर उस सूखे तरु पर
जाकर तुम क्यों बैठ गए हो।
तुम भी मेरी तरह क्या कहीं
प्रिय चिन्ता में डूब गए हो।।

सुनो-सुनो हे सुहृद पंछी
पल दो पल को सखा बनो तो।
इक दूजे से दुःख सुख बाटें
बात कहो कुछ, मुझे सुनो तो।।

कैसे हो तुम! पंख पसारे,
पता नहीं क्यों फिरते मारे।
कितना अच्छा होता यदि तुम
हो आते प्रिय देश हमारे।।

तनिक काम कर देते मेरा
पड़ता हूँ मैं चरण तुम्हारे।
संदेशा पर्वत ललना को
पहुँचा देते मीत हमारे।।

अभी यहीं थी कहाँ गई तुम
मनमौजी हो समझ गया हूँ।
इतना समझा कर मैं तुमको
आज स्वयं में उलझ गया हूँ।।

कफू-कफू की रटन तुम्हारी
तन मन आग लगा देती है।
मिलन एक दिन होगा प्रिय से
रह-रह आस जगा देती है।।

आओ बैठो पास हमारे,
एक मार्ग के एक बटोही।
खट्टी मीठी बातें करते
कहाँ उड़ चले ओ निर्मोही।।

Scanned with CamScanner

अरे वाह, तुम तो कफुवा थे
चले गये तब याद आ रहा।
पूछ न पाया कुशल क्षेम हा,
पता नहीं मन बुझा जा रहा।।

ऐसी भी क्या बात हो गई
सखा समझलो रूठ गये हो।
या उसकी यादों में तुम भी
मेरे जितना टूट गये हो।।

लेकिन ऐसा भाग कहाँ है,
जो तुम माँगो वह मिल जाये।
फिर क्यों रहे अनिश्चय मन में
काहे प्रिय की आस लगाये।।

अरे! अरे! यह कौन अचानक
बैठा ठीक तुम्हारे पास।
समझ गया मैं बात तुम्हारी
सफल हो गये सारे काज।।

देखो कैसी सुन्दर जोड़ी
सच में तुम दोनों बड़भाग।
मेरे हिय में ज्वल्त पड़ी है
सुलग रही है तम की आग।।

तुम दोनों भी पंख पसारे,
दूर क्षितिज के पार उड़ गये।
दो पल पहले टिट-टिट, टुट-टुट
अपना मीठा राग गा गये।।

बड़ी हौसि जैसी लगती है
युगल मनोहर! तुम्हें देखकर।
यादों के इन मधुर क्षणों को
रखना होगा सखे सहज कर।।

Scanned with CamScanner

इक दिन हम भी इसी तरह से
मिल अपने दुःख-सुख गायेंगे।
तारों जितने मनसुप अपने
कहते सुनते खो जायेंगे।।

सोच रहा था कुशल पुन्तुरी
भर कर तुम ले आये आज।
छोटा भाग बड़ा कैसे हो
याँ खोरि बेरै लग गई आग।।

जहाँ तम्हारे मधुर स्वरों से
कफुवा-कफुवा गूँजे वन-वन।
मेरा भी तो देश वहीं है
उसी लोक को उड़ जाता मन।।

अपने मन कोटर के तिनके
यूँ ही उड़ते रह जायेंगे।
रिक्त कलश यों मुह बाये-से
कभी नहीं अब भर पायेंगे।।

सपन सलोने रखे सजाकर
यूँ ही धूमिल पड़ जायेंगे।
यादों के जो गुँथे हार हैं
बस मुरझा कर रह जायेंगे।।

सकल पदारथ सम्मुख मेरे,
किन्तु प्राप्ति का योग नहीं है।
याकि श्राप है किसी भूल का,
मन वांछित क्यों भोग नहीं है।।

दुबवक दाता राम कहा है
साथी कोई बन जायेगा।
हम दोनों की पीर समझकर
संदेशा पहुँचा आयेगा।।

Scanned with CamScanner

वैसे यह संदेश पिटारी
भेटुई जैसा पहुँचा देते।
सारे तीरथ करने का फल
बड़ी सहजता से पा लेते।।

ओ मोनाल, कहाँ से आये
तुम और मैं हैं एक देश के।
कहो वहाँ की कुशल मित्र तुम
बोल सुनाओ मेरी प्रिय के।।

क्या तुमने देखा था उसको?
कैसी थी क्या करती थी वह।
झट्ट मुझे तुम बतला दो ना
हृदय बंध टूटा जाता अब।।

कैसी होगी समझ रहा हूँ
तुम बतलाते तो अच्छा था।
रैन अँधेरी घिरी हुई है
तम छँट जाता तो अच्छा था।।

दुःख में सुख में कैसी होगी
नहीं सुन रहे बात हमारी।
शून्य पड़े इस नीलाम्बर में
कहाँ दृष्टि है मित्र तुम्हारी?

तुम भी कहाँ सुनोगे मेरी
सभी अनसुनी कर जाते हैं।
कुछ पल छल मन बहलाने को
निगुरि किरकिरी कर जाते हैं।।

मैं फिर भी आशा की डोरी
थामे हूँ पथ खोज रहा हूँ।
कोई अपना बन जायेगा
ऐसा ही कुछ सोच रहा हूँ।।

Scanned with CamScanner

कोई तो मिल ही जायेगा
बिगड़ा भाग सँवर जायेगा।
अनहोनी है, होति भी होगी
साथी अपना बन जायेगा।।

कृपा करोगी मुझ पर इतनी
जाओगी बहना उस ओर ?
ले अकास की भुकी हिमाला
वहीं बँधी है प्रिय से डोर।।

किन्तु कौन अन्वार बताऊँ
हाय शुभे से मिलती होगी।
सम्मुख प्रश्न खड़ा है टेड़ा
पता नहीं किस रूप में होगी।।

जहाँ रश्मियाँ उषाकाल में
नहला जाती रजत कणों को।
रंगोली सी कर जाती हैं
देखोगी उन मधुर क्षणों को।।

स्वप्नलोक सी छवि आभामय
छा जाती है शिखर-शिखर पर।
मेरे देश की कण कण माटी
दिप-दिप जाती निखर-निखर कर।।

सुनो ध्यान से भटक न जाना
लम्बा मारग अटक न जाना।
नहिं विलम्ब का कारण कोई
संदेशा देकर आ जाना।।

तभी वहाँ का संदेशा ला
बहना मुझे सुना पाओगी।
सच कहना ओ बहना मेरी
क्या उससे तुम मिल आओगी?

Scanned with CamScanner

सन-सन करती डोल रही हो
या फिर मुझको हुंडुर दे रही।
या औरों की तरह मुझे तुम
धोखा ही बस निगुर दे रही।।

या ये पंख मुझे दो पांखी
मैं ही उड़ कर हो आता हूँ।
हम दोनों हों, कुशल जहाँ हों
कह कर बस वापस आता हूँ।।

तुमने शायद नहीं सुना हो !
मैं जल्दी वापस आता हूँ।
फुर्र हो चले निठुर कहाँ तुम
मैं कहता ही रह जाता हूँ।।

गई विनय यह व्यर्थ जिसे मैं
युग युग से करता आया हूँ।
मैं असमर्थ रहे समर्थ तुम
बार-बार कहता आया हूँ।।

बक-बक ही करता आया हूँ
पर मेरी सुनता है कौन।
नहीं सुनी यह राम कहानी
तुम्ही सुनो हे बहती पौन।।

●

Scanned with CamScanner

सुहृद कैसा गुण तुम्हारा ज्योति जलती बुझा देती
एक चिंगारी विरह की विकट ज्वाला बना देती।

मधुर मद्धिम परस से निज कोपलों को खिला जाती
मलय की मृदुगन्ध को तुम हर दिशा में डुला जाती।

मृत्यु को तुम चेतना दे प्राण का संचार करती
तुम्हीं तो हो प्राण तन में जो नया संसार रचती।

●

Scanned with CamScanner

जाकर प्रिय के देश सुनो ना
ज्योति कलश छलका आओगी।
बिखर गये जो मन के मोती
बहना, उन्हें पिरो आओगी?

जल्दी जल्दी जाओ कहना
कुशल यहाँ सब भाँति सुहाई।
कैसे उसका मुखड़ा देखूँ
बड़ी जोर की लगी नराई।।

मेरी तरह उसे भी बहना
रह-रह याद सताती होगी।
कैसा अटक लगा है मुझको
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

सुनो पवन बहना क्या मेरा
संदेशा तुम दे आओगी।
या फिर मुझको टरका कर तुम,
अपनी दिशा चली जाओगी।।

माटी के कण-कण की सौंधी
मृदु सुगन्ध से भर जाओगी।
लेकिन कठिन हुआ कह पाना
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

रक्तिम श्वेत गुलाबी सुन्दर
वहाँ बुरूँश महकते होंगे।
खेतों की मेड़ों पर सुन्दर
प्यूरुड़ि पल्लव खिलते होंगे।।

काफल कलश रहे अमृत के
कानन-कानन पकते होंगे।
ग्वाल बाल मीठे-मीठे चुन
बड़े स्वाद से चखते होंगे।।

Scanned with CamScanner

सघन वनों की हरियाली में
छलछल जहाँ गधेरे छलकें।
चाँदी सी मालाएं बनकर
झरने पर्वत-पर्वत झलकें।।

बहुत दूर वह देश विराना
क्या तुम वहाँ पहुँच पाओगी?
मुझको संशय, पहुँच भी गई
लौट नहीं फिर आ पाओगी।।

तब भी मैं पहचान बतादूँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।
लेकिन उस सी वहाँ कई हैं
कैसे तुम यह जान सकोगी।।

सुनो-सुनो प्रिय की अँखियों में
तुम मेरी ही छवि पाओगी।
या उस देव लोक में जाकर
खोई-खोई रह जाओगी।।

ताल-पोखरों का निर्मल जल
लहर लहर लहराता होगा।
कमल दलों की अरुणाई से
आभामय हो जाता होगा।।

छन्द, ताल, लय, सुर, स्वर मिलकर
करते हैं जिसका गुणगान।
युगों युगों से प्रहरी बनकर
खड़ा हिमालय सीना तान।।

ज्योतिर्लिंग जागेश्वर तीरथ,
सरयू तट व्याघ्रेश्वर बसते।
बदि और केदार धाम हैं
जन-मन जिनका वंदन करते।।

Scanned with CamScanner

इन्द्र धानुष सी सतरंगों में
धरती वहाँ नहाई होगी।
रंग-बिरंगे पुष्पों की ज्यों
चादर वहाँ बिछाई होगी।।

वहाँ मोहिली सरस सुगन्धित
फूलों भरी घाटियाँ होंगी।
आँचरियाँ द्यु लोक से आकर
भावन नर्तन करती होंगी।।

ऋषि मुनियों के तपस्थल हैं
दर्शन भी तुम कर आओगी।
वहीं मायका पारवती का
स्वर्गलोक सा तुम पाओगी।।

देव भूमि कहते हैं उसको
महादेव शंकर का वास।
स्वर्ग द्वार भी रहा वहीं पर
वहीं पुण्य तीरथ कैलास।।

पल-पल पंख लगा वेदों की
वाणी विचरण करती होगी।
उच्च शिखर पर आसन साधे
गौरी अम्बा बैठी होगी।।

●

Scanned with CamScanner

काफल तरु पर रक्तिम श्यामल
लदे हुवे ज्यों मीठे काफल।
वैसे ही मन लदा याद से
हो जाता पल पल में घायल।।

इन अँखियों में छा जाते हैं
तम के श्यामल-श्यामल बादल।
केवल तुम कर सकती बहिना
कुशल सुनाकर मन को निर्मल।।

तुम क्या जानो उर की पीड़ा
हरपल लगा रहता यह कीड़ा।
मात्र यही तुम उसे सुनादो
टूट रहा यादों का भीड़ा।।

वहाँ जहाँ पर आस लगाये
देहरी पर बूढ़ी अम्मा हों।
आँगन में गुड़गुड़ी थमाये
वृद्ध पिता राहें तकते हों।।

और एक छोटी सीं गुड़िया
आंगन बीच थिरकती होगी।
उसे देखकर उसके मन में
मेरी याद कसकती होगी।।

वहीं कहीं पर घूंघट में मुख,
सुवा पल पल छिन गिनती होगी।
उसके पावन मन मंदिर में
जोत अमर वह जलती होगी।।

बना बटोही था जिस दिन मैं,
आई थी पहुँचाने झटपट।
जब तक धार पार ना पहुँचा
देखी थी मुझको वह इकटक।।

Scanned with CamScanner

उसकी डब-डब भरे नौलं सी
आँखें बरस रही थीं टप-टप।
अब तो सुबह साँझ दिन राती
बस बाटूली लगती घट-घट।।

मेरे इज-बौज्यू को सुमना
इज-बौज्यू सा रखती होगी।
कर्मधर्म सब काम निभाती
उनकी सेवा करती होगी।।

कठिन बुढ़ापे में दोनों की
लाठी वह बन जाती होगी।
अब भी प्रश्न करोगी बहना
क्या पहचान प्रिया की होगी?

टुप-टुप वृद्धजनों का सजनी
आशीर्वाद कमाती होगी।
उनके एक इशारे को वह
सर आँखों पर रखती होगी।।

●

Scanned with CamScanner

कभी सामने उच्च शिखर से
सुपिन परी उतरती आती।
हरा भरा आँचल फैलाकर
सन सन पवन महकती आती।।

सच विश्वास करो तुम मेरा
अभी अभी ज्यों आई होगी।
लेकिन कैसे, क्या बतलाऊँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

दु:ख पहचानो अपना जानो
मन का बोझ बँटाना जानो।
बिरह जाल के ताने बाने
मिल कर काटें मेरी मानो।।

कुछ थिति मन को दे पाओगी
पीड़ा कुछ कम कर आओगी।
कठिन समस्या केवल यह है
विविध रूप में तुम पाओगी।।

तनिक पीर यदि होती तुमको,
सुनती मेरे मन की बातें।
जीवन में कैसे कटती हैं,
विरह भरे दिन विरही रातें।।

आशा चूर-चूर ट्वल मन की,
और रहा दर्शन बिन प्यासा।
झूठा यह विश्वास हो गया,
तुम भी देकर गई निराशा।।

हे निर्झर! झर रहे युगों से
पर तुम कब किसकी सुनते हो?
अपनी ही छणछण में अपना
राग अलापे ही जाते हो।।

Scanned with CamScanner

मैं भी कबसे ठगा-ठगा सा
कोई साथी खोज रहा हूँ।
राग विरह का गाये जाओ
ऐसा ही कुछ भोग रहा हूँ।।

तुम बहकर नदिया से मिलते
नदिया सागर से मिल जाती।
सागर को सागर ही रहना
क्या दुःख क्या संदेशा पाती।।

उसकी कोई चाह नहीं है
उसके आगे राह नहीं है।
बस उबाल आ उड़ जायेगा
बादल बन जल बरसायेगा।।

मैं भी स्थिर वो भी तो स्थिर है
स्थिर जीवन का चक्र।
सहज नहीं जो हम पा जायें
सब रेखाएं वक्र।।

लटक गये ज्यों नील गगन में
टिम-टिम करते सारे तारे।
यहाँ बुझा मन थमती साँसें
अटक गई हैं मन को मारे।।

●

Scanned with CamScanner

और देखो क्या समस्या
पर समस्या घिरी आती।
विकट है इस मार्ग चलना
मन तरणि तो डोल जाती।।

कहूँ तो किससे कहूँ मैं
और चुप भी रहूँ कैसे।
उमड़ कर तूफान आते
घुमड़ आते मेघ जैसे।।
पवन बहना कह चुका मैं,
कह चुका सौ बार अपनी
किन्तु किसने ल्याख लगाया,
कर गये सब अपनि-अपनी।

इसलिये तो विनय तुमसे
कर रहा हूँ शीश नत है
क्यों बहन संदेश मेरा
कहो प्रिय को दे सकोगी?

●

Scanned with CamScanner

बीता दिवस रात घिर आती,
गई रात तब दिन खिल उठता।
जग को ठग कर काल चक्र यह,
अपने पथ पर चलता रहता।।

बीतें हर पल पीड़ा मण्डित
क्या तुम कुछ कम कर आओगी।
उसके मलिन चन्द्र से मुख पर
विरह व्यथा मुखरित पाओगी।।

भला किसे अच्छा लगता है
प्रिय के बिन अपना संसार।
सच पूछो तो सही कहा है -
'घुरड़ काँकड़ कैं चाँट्ठै प्यार।।'

पानी के बाहर मछली सा
मैं क्या वह भी रहती होगी।
दग्ध-हृदय लेकर वह पगली
'निष्ठुर प्रियतम' कहती होगी।।

उससे कहना याद करे वह
बातें वह पिछले सालों की।
बातें ही करते रह जाते
अपनी कुछ दुनिया वालों की।।

प्रिय का सच प्रिय का संदेशा
उसके मुँह से निकल पड़ेगा।
और देखना सुव अँखियों से
अश्रु-कलश भी छलक पड़ेंगा।।

Scanned with CamScanner

भाव विभोर मेरी नलिनी की
बाँहों में बंध रह जाओगी।
उसके सुमधुर आलिंगन से
विलग नहीं तुम हो पाओगी।।

ऐसा न हो वहीं रह जाओ
रह भी जाओ तो रह लेना।
मेरे हिय की सारी बातें
झटपट उसको बतला देना।।

और वहाँ की कुशल बात तुम
ला दोगी तो ला ही दोगी।
विवश, तुम्हें कैसे समझाऊँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

अरे बावरी कहाँ चली तुम
आते जाते कुछ कह जाओ।
इस पगले मन की पीड़ा को
कम करने में हाथ बटाओ।।

छलबलाट क्यों करती इतना,
कुछ क्षण क्या तुम थम पाओगी
भूल गया फिर, कैसे कहदूँ
तुम भी नहीं समझ पाओगी।

कितनी सुन्दर कितनी प्राकृत
कितनी शान्त और निर्मल।
ब्रह्मकमल सी देखणछाल वह
खिलता उसका रूप धवल।।

Scanned with CamScanner

देवभूमि थाती का कण-कण
वह ज्योतिर्मय करती होगी।
हिम शिखरों में शीश मुकुट-सी
स्वर्णिम आभा भरती होगी।।

मेरा तो सब कुछ वो ही है,
उसके बिन जग सूना मेरा।
यह बज्यूणि माया भी कैसी
निगुरि जगह पर लाकर घेरा।।

इससे ज्यादा व्यथा कथा क्या
तुम्हीं बताओ किसकी होगी।
कैसे कह दूँ तुमसे बहना
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

●

Scanned with CamScanner

चार बोल मेरी न्योली, उसे सुना देना।
चार घड़ी उसका उदेख भुला देना।।

दिन गया रात आई रात बीती प्रात।
घड़ी घड़ी कम हुई जीवन में आस।।

बीते दिन, मास बीते, बीत गये वर्ष।
प्रिय के मिलन बिना, हिय में न हर्ष।।

हिरदू की पीड़ा का भी, नहीं कोई अंत।
ये विरह कैसे कटे, नहीं पास कंत।।

नाक में नथूली झूली पूनम सी चन्द।
ज्युनाई सी रात नहीं द्युति हुई मन्द।।

झर झर झर रहा चीड़ का पिरूल।
सर सर सर रहे मन में सौ शूल।।

दया कर ओ पवन जा पिया के देश।
और उसे दे आ मेरा कुशल संदेश।।

सुन-सुन हिया करे मेरा धक-धक।
झिट एक काम मेरा करदे तू झट।।

ये जीवन, माया छल, छलता है मन।
बहता पानी थम जाये नहीं थमे मन ।।

वो पुराने दिन अब हो गये हैं स्वैणा ।
आयेगी क्या जीवन में फिर रितु रैणा।।

बिना मरे देखे कौन नरक-सरग।
मिलन के बिना कम न होगी दरक।।

जादे जादे जादे भागी तेरि खुटी सिलाम।
हे परमेश्वर विधि आज कैसे बाम।।

अरे-अरे कहाँ गई मुँह बोली बैणा।
तू जो वहाँ हो आती तो देव होते दैणा।।

Scanned with CamScanner

सुरमाइ-सुरमाइ साँझ पड़ रही
पंछी लौट रहे हैं घर को।
टुन-टुन, टुन-टुन घानी बजती
लौटे ढोर-डंगर भी घर को।।

थके-थके पैरों से ग्वालन
संध्या झूली गाती होगी।
कैसी ब्याल पड़ी जीवन में
वह सोची रह जाती होगी।।

उसके कठिन परिश्रम से ही
खेत-खेत मुस्काता होगा।
माटी का कण श्रम से मिलकर
सोने में ढल जाता होगा।।

झूम रही होंगी जब फसलें
क्या बहार आ जाती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

एक बूँद श्रम जल से उसके
सौ-सौ रंग बरसते होंगे।
अमृत जल छलका धरती में
नवल चेतना भरते होंगे।।

हाय शुभे भावी जीवन हित
कठिन परिश्रम करती होगी।
कहीं दूर खेतों में खोई
कर्म योग रत रहती होगी।।

देखो हरे-भरे खेतों में
बाली-सी लहराती होगी
खाद भरा डाला लेकर वह
दूर सार को जाती होगी।

Scanned with CamScanner

या पिरुल का जाल सिमटने
दराड़ाण्यों संग जाती होगी।
कहते-कहते भूल गया हूँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

गोबर माटी सने हुए पग
श्रम गंधा बिखराते होंगे।
भरी धोपरी घाम चूटते
घर वन एक लगाते होंगे।।

गयी रात अपने पैरों को
वह विराम दे पाती होगी
शब्द नहीं मैं गढ़ पाता हूँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।

फिर दिसाँण जाने से पहले
अपनी सुधि में आती होगी।
छ्यूल जला मरहम लीसे से
अपने पैर टल्याती होगी।।

या कि थकान दूर करने को
लमपसार सो जाती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

मंगल काज तीज त्यारों में
मेरी कमी खटकती होगी।
मुख मण्डल कर्तव्य संजोये
टुप-टुप काम निभाती होगी।।

ऐसे समय न किसके मन में
कहो कुचकुची होती होगी।
दिखलाने को जग के आगे
मन्द मन्द मुसकाती होगी।।

Scanned with CamScanner

डाली पर आ बैठ घुघूती
जब-जब घुर घुर करती होगी।
सुनकर उसकी कातर वाणी
वह झुर-झुर रह जाती होगी।।

'बता घुघूती कब आएंगे
कंत हमारे' कहती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

या आँगन में झुंगर कूटती
तुम्हें वहाँ वह मिल जायेगी
घर-घर, घर-घर गेहूँ मडुवा
तुम्हें पीसती मिल जायेगी।।

या जब गोदी की छोटी भौ
बाबा-बाबा करती होगी।
'बाबा तेरे हैं निर्मोही'
बिटिया से वह कहती होगी।।

या डाले में उसे घुर्या कर
लोरी गा थपकाती होगी।
इसी बहाने पल दो पल वह
मन को व्योम लगाती होगी।।

या आँचल में उसे छुपाकर
अपने से लिपटाती होगी ।
सक-सकान सी सपन लोक में
पल भर में खो जाती होगी।।

कहीं खेत में बकरी आकर
सब उजाड़ कर जाती होगी।
और दूध चूल्हे पर रक्खा
आ उबाल बहजाता होगा।।

Scanned with CamScanner

घास बिना खूंटे पर भैंसी
रह-रह वहां रँभाती होगी।
क्या जो पहले करूं सोचकर
वह चिङान हो जाती होगी।।

'नहीं हमारी सुधि लेते हैं',
यह उलाहना देती होगी।
भर अंग्वाल में छोटी 'भ' को
दूर कहीं खो जाती होगी।।

देखो समय नहीं है ज्यादा ,
कब तक मुखतिर खड़ी रहोगी।
सब कुछ तो मैं बता चुका हूँ
इससे बाकी क्या चाहोगी।।

रत वियोग में कर्म योगिनी
विरह तपस्या करती होगी।
समझ गई ना भली भाँति तुम
मेरी प्रियतम कैसी होगी।।

जितना ही कोमल मन उसका
मेरे मन से उलझा होगा।
उतना ही वह कर्तव्यों के
संघर्षों से तपता होगा।।

उसके मन की सारी पीड़ा
वीणाई पर ढलती होगी।
मन्द पवन में सप्तसुरों की
मधुर रागिनी बजती होगी।।

उसकी थकी हुई आँखों में
झिटघड़ि नींद न आती होगी।
और जून यात्रा पूरी कर
शिखर पार ढव जाती होगी।।

Scanned with CamScanner

सारे पर्वत सोये होंगे
इकलकटू बस जागी होगी।
सुनो चंचला समझ गई ना
पर्वत बाला कैसी होगी।।

चक्षु सलिल से रह रह उसका
फोचीना भर जाता होगा।
हृदय कोठरी में तब उसके
काँटा-सा गढ़ जाता होगा।।

मेरे इस भटके मन को बस
स्थिर ही तुम तब कर पाओगी।
कुशल वहाँ की लाकर दोगी
और वहाँ पहुँचा आओगी।।

बौवा मुझको कौन मिल गया
तू भी मन में कहती होगी।
उलझे मन की उलझी बातें
तेरा मन उलझाती होगी।।

जिस दिन काग द्वार पर आकर
अपना वचन सुनाता होगा।
उस दिन उसका हवेलाई मन
हो प्रफुल्ल खिल जाता होगा।।

तकती राह प्रतीक्षा में वह
बैठी ही रह जाती होगी।
किंतु छि हाड़ी क्या बतलाऊँ
मेरी प्रेयसि ऐसी होगी।।

दूर कहीं पत्ता भी खड़के
कान खड़े हो जाते होंगे।
मेरे तो पदचाप नहीं हैं
पल-पल छुणुक चिताते होंगे।।

Scanned with CamScanner

जाने कब आ जायें स्वामी
कान लगाकर बैठी होगी।
लेकिन कठिन हुआ कहना प्रिय
आह प्रियतमा कैसी होगी।।

रहूँ जहाँ भी कुशल रहूँ मैं
पत्थर-पत्थर पूजे होंगे।
ईष्टदेव के द्वारे जाकर
कुछ करार भी बांधे होंगे।।

मेरी कुशल कामना के हित
वह उचैण भी रखती होगी।
किसी सखी से गुप-चुप अपने
अन्तर्मन की कहती होगी।।

गोलू गंङ्गा सैम, भोलज्यू,
रखवाली सब करते होंगे।
छुरमुल हरू भूमिया ऐड़ी
दैण सदा ही रहते होंगे।।

नित्य स्मरण कर उन देवों का
मधुर कामना करती होगी।
मैं भी व्यक्त नहीं कर पाता,
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

उसकी मीठी बोली सुनकर
कानों में मिसरी घुल जाती।
लौट-लौट कर याद पुरानी
बातों की सब मुझको आती।।

इस बज्यूण मन की सब बातें
एक-एक कर कह आओगी।
थोड़ी सी बातें हैं बहना
जाकर उसे सुना आओगी।।

Scanned with CamScanner

देखो इस पत्थर पर मैंने
गढ़ दी है इक सुन्दर मूरत ।
ऐन-मैन सुव सी लगती है
सुघड़ सलोनी प्यारी सूरत।।

बहना तुम सीधे-सीधे ही
जाकर उससे मिल पाओगी।
अब तो शेष नहीं कुछ कहना
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

सुनो-सुनो झाँवर की रुन-झुन
वीणा की झनकार सरीखी।
कैसा सुन्दर रूप, वसन हैं,
छायी होगी नवल वधू-सी।।

सच में देखो ज्युनाइ रंग में
अभी नहाकर आई होगी।
देखो-देखो बहना इसको
यह पहचान प्रिया की होगी।।

नहीं उतरती चित्रहार-सी
मानो मेरे पास खड़ी है।
हृदय हँस उड़ने को आतुर
मानो केवल देह पड़ी है।।

घायल की गति घायल जाने
प्रेम पीर क्या होती होगी।
यह सागर इतना गहरा है
थाह किसी ने पाई होगी?

तुम जाओ ना जाओ लेकिन
मुझको तो इक दिन जाना है।
अपने ह्यूंन भरे जीवन में
फिर बसन्त ने छा जाना है।।

Scanned with CamScanner

तब तुम सोचोगी मन ही मन
है अटूट यह प्रेम हमारा।
हमें मिलन में मगन देखकर
पाओगी तुम खुद को हारा।।

जब पेड़ों पर कोमल पत्ते
तब डाली मुसकाती होगी।
लो फ़ागुन का हुआ आगमन
कोयल गाना गाती होगी।।

भँवरे की गुनगुन-गुनगुन भी
उसके कान न भाती होगी।
स्वयं उदेख भरे मन को वह
किसी तरह समझाती होगी।।

पात रहित मन की डाली में
फिर हरियाली छा जायेगी।
नवल गात लेकर यह धरती
पग-पग पर सुख छलकायेगी।।

स्वागत करने मधुरमास भी
पहुंचेगा मन के उपवन में।
गुनगुन का संगीत बहेगा
सन-सन बहती मन्द पवन में।।

पावन पीत रंग भरने को
खिली हुई ज्यों पीली सरसों।
इस पतझड़ सी काया में ही
आशा दीप जला है बरसों।।

चुप-चुप ऐसे में वह पगली
नयन नीर छलकाती होगी।
जाड़ों की लम्बी रातों-सी
किसी सोच में डूबी होगी।।

Scanned with CamScanner

भ्रमर दलों ने कमल दलों पर
आकर अपना घेरा डाला।
इस मन में कठोर जाड़े की
शीत लहर ने डेरा डाला।।

कठकिड़ जैसी घड़ी-घड़ी यह
पीड़ा उठती रहती होगी।
अब तो मैं भी हार गया हूँ
क्या पहचान प्रिया की होगी?

माघ मुचा तो मौनि मुच गई
फागुन मुचा, मुचे पशु गाय।
चैत माह के जाते-जाते
कपि चुन चुन कर बनफल खाय।।

हाय विरह कब मुच पायेगा
खड़ी ठगी रह जाती होगी।
स्वयं समझ लो और बूझ लो
मनभावन प्रिय कैसी होगी ?

गातीं फाग होल्यारन सब-
'बलमा घर आये फागुन में।'
गज मोती ले चौक पुरातीं-
होंगी सब अपने आँगन में।।

केशर रंग से रंगी चुनरिया
उसको भली न लगती होगी।
मन का रंग अगर हो फीका
बाहर फिर क्या होली होगी।।

खाव में जैसी पड़ी कहीं वो
अँसुवन चौक पुराती होगी।
रंग-रंगीली हँसी ठिठोली
उसके मन ना भाती होगी।।

Scanned with CamScanner

'हे मधुमाधव आ पहुँचे तुम
मेरे उनको साथ न लाये?'
आतुर हिय पिय से मिलने को
बाँहों की लतिका फैलाये।।

सतरंगी पुष्पावलि लेकर
मन का थाल सजाती होगी।
'बड़े निदृय हो जरा सोचते
हे वसन्त' तुम कहती होगी।।

'तुम आते जाते रहते हो
पता नहीं कब गये आ गये।
तुमको कौन पड़ी है ऐसी
तुम भी अपने नहीं, पराये।।'

पता नहीं किस किस से क्या-क्या
वह लाटि कहती रहती होगी।
सच में मुझे अधिक क्या कहना
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

किलमाड़ और हिसालु डाली पर
कोमल अँकुर फूट रहे हैं।
किन्तु जिगुड़ि के सारे सपने
एक एक कर टूट रहे हैं।।

ऐसे समय हृदय में उसके
मेरी खुद लग जाती होगी।
भला तुम्हें बतलाऊँ कैसे
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

'कुछ दिन कुछ पल और शेष हैं
आने ही वाले हैं सजना।'
संदेशों से भरी पोटली
जाकर उसके सम्मुख रखना।।

Scanned with CamScanner

बड़ी चंचला भुली पवन हो
सच में क्या तुम हो आओगी?
यादों से विदीर्ण इस मन के
सपनों को सच कर आओगी।।

तरु शाखों पर बैठे पांखी
टिट-टिट, टुट-टुट करते होंगे।
दाना तिनका चुगते बिनते
फुर्र-फुर्र उड़ जाते होंगे।।

वह भी बोझिल मन ले वन से
घर की राह पकड़ती होगी।
कैसे सफल बने यह जीवन
ताना बाना बुनती होगी।।

ज्यूनाई रातों में जब भी
झोड़-चाँचरी लगते होंगे।
विरह भरी न्योली के स्वर तब
रह-रह मन में उठते होंगे।।

चातक सी टकटकी लगाये
अपलक चाँद निहारे होगी।
गिन गिन तारे अश्रु छल-छला
उसकी आँख पटाई होगी।।

दूर घने जंगल का राही
छेड़ रहा हो गीत सुहाना।
किन्तु महाभागा को मेरी
नहीं सुहाता होगा गाना।।

मेरी यादों की ढपली ले
राग विरह का गाती होगी
लेकिन तुम्हें बताऊँ कैसे
क्या पहचान प्रिया की होगी।

Scanned with CamScanner

"काफल पाक्को मैंल नि चाक्खो"
कफुवा रोदन करता होगा
"पूर हैं पुतई- पूर्ण-पूर्ण हैं"
कहीं दूर कोइ रोता होगा।।

सुन कर यह कफुवा के मन में
कैसी ठण्डी पड़ती होगी।
ऐसी ठण्डी उसके मन में
पड़ने से रह जाती होगी।।

वो दोनों सुख दुःख के साथी
पर तुमसे कहके क्या होगा।
ऐसे ही हम भी रीते हैं
भला और कोई क्या होगा।।

मन के पंख लगा वह हँसी
दूर दूर-उड़ आती होगी।
घुन-मुन टोपे किसी किनारे
गुम-सुम सी वह बैठी होगी।।

जेठ मास की तपी कोकिला
कुहू-कुहू कर गाती होगी।
कौए सी कर्कश वाणी बन
हिय में हूक लगाती होगी।।

हाय भाग्य रेखा क्यों मेरी
इतनी टेड़ी मेड़ी होगी।
बहना मुझको बतलाना तो-
वह भी ऐसा कहती होगी?

●

Scanned with CamScanner

कल तक था मधुमास आज क्यों
पात वृक्ष के सभी झड़ गये।
भ्रमर दलों का गुन-गुन गुंजन
कहाँ लुप्त क्यों हुआ मौन है।।

कहाँ पुष्प मकरन्द, सुगन्ध वह
कल तक कण कण में छाई थी।
किसने सब धूमिल कर डाला
इतना निष्ठुर कौन हुआ है।।

चीड़ वृक्ष का रोदन स्वाँ-स्वाँ
दुःख में राग मिलाता होगा।
और पवन का झौंका खाकर
दूर कहीं उड़ जाता होगा।।

क्षितिज पार की गहराई में
उसने आँख लगाई होगी।
रुण-भुण रुण-भुण दिवस आ गये
रुंङन-तुंङन हो जाती होगी।।

मडू-मादीरे के खेतों में
कहीं गुड़ाई करती होगी
या घुटने-घुटने पानी में
कहीं रुपाई करती होगी।।

हुडुक बौल की किसी कथा में
सुमना जिया लगाती होगी।
लेंकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

कभी दनेला कभी पटेला
लगने से रह जाता होगा।
उधरा भीड़ा किसी खेत का
चिनने से रह जाता होगा।।

Scanned with CamScanner

और कभी हलिये से तिक-तिक
उसको करनी पड़ती होगी।
अब तक तो पत्थर कह देता-
यह पहचान प्रिया की होगी।।

देखो यह सावन की रिमझिम
झुण मुण रसवन्ती फुहार है।
धूप छाँह का खेल चला है
सतरंगी बरखा बहार है।।

ऐसी ऋतु में मधुर मिलन की
आस लगाये रहती होगी।
नहीं बन रही बात कोई भी
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

दण-दण पड़ती सतझड़ियों में
इन्द्रधनुष की सतलड़ियों में।
रंगीले उस मेरे देश में
भीग-भीग वह निझुत्त होगी।।

डौंरि खेलते गौ बछियों की
ग्वालन बन कर फिरती होगी।
तप में लीन तपस्वी जैसी
वह उडियार में बैठी होगी।।

जब अषाढ़ में घन गर्जन में
चम-चम चाल चमकती होगी।
तब तब उसके कोमल हिय में
धक -धक सी हो जाती होगी।।

श्यामल नील मेघ मण्डल जब
दिशा-दिशा छा जाते होंगे।
भय के मारे महाभाग के
नयन स्वयं मुद जाते होंगे।।

Scanned with CamScanner

दण-दण वर्षा बरस रही है
दण-दण बहती गाढ़ गधेरी।
दण-दण नदियाँ दणक रही हैं
दण-दण राग अलाप रही हैं।।

चतुर्मास इठला इठला कर
दिशा-दिशा में नर्तन रत है।
इन्द्रचाप में चढ़ी प्रत्यंचा
प्रकृति सुन्दरी कर शोभित है।।

नख शिख सुघढ़ रूप मनमोहन
रंगोली-सी कौन है छाई।
छोटे अमृत जल-मनकों की
गागरिया किसने छलकाई।।

शुभ अवसर स्वागत कैसे हो
इसी प्रश्न में उलझी होगी।
कब आवे परदेशी उसका
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

पिहू-पिहू के गीत सगुन स्वर
गाती उड़ती डाली-डाली।
जंगल में मंगल कर देती
पता नहीं कैसी मतवाली।।

कभी निकट तो आती मेरे
मेरा पागलपन सुन जाती।
केवल अपनी रटन लगा कर
मन का बोझ बढ़ा ही जाती।।

सागर सी लहरें उठती हैं
धान मादिरे के खेतों में।
जवा कुसुम खिल जाते होंगे
प्रियतम के मन की क्यारी में।।

Scanned with CamScanner

उसका श्रम उसकी आशाएं
कण-कण में फलजाती होंगी।
शुभ श्रृंगार देख मन ही मन
वह अति अफुली जाती होगी।।

●

बुग्यालों में बिछी मखमली कालीनों में
कस्तूरी मृग भरें कुलाँचे नर्तन करते।
वसुंधरा का मानो वह अभिनन्दन करने
छोटे-छोटे मोहिल छौने उछल कूद कर।।

और हंस मानस के मोहिल पंख पसारे
परियों से लगते हैं, जैसे स्वप्न लोक में।
खो मत देना अपनी सुध-बुध वहाँ कहीं तुम
वरना जहाँ तुम्हें जाना है- बहुत दूर है।।

वही वेदनी, रचे गये थे वेद जहाँ पर
पतित पावनी भागिरथी भी हुई प्रवाहित।
आदि पुरुष मनु ने भी चिन्तन वहीं किया था
वहीं हिम शिखर सबसे ऊँचा विश्व मकुट है।।

गंगा यमुना सरस्वती तीनों से सिंचित
शिव अलकों सी कोटि कोटि बहती सरिताएं।
हरण कर रही कलि मल का जो युगों युगों से
वही हमारी देव भूमि उत्तराखण्ड है।।

किन्तु विडम्बना तो देखो उस धरती की तुम
जहां पानी और जवानी बहती ही जाती है।
यही नियति ने क्या मेरे भी नाम कर दिया
कभी कभी मैं यही सोचता रह जाता हूँ।।

●

Scanned with CamScanner

सुनो-सुनो तो याद आ गया
बतलाता अनुहार तुम्हें लो।
डब-डब मृग नयनी सी अँखियाँ
अरे ध्यान से बातें सुनलो।।

मेरी पीड़ाओं की पोथी,
लेकर फिरती रह जाओगी।
फिर बहना मुझसे ना कहना
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

देखो कितना समय हो गया
विनय कर रहा हाथ जोड़कर।
या फिर तुम मुझसे कह दो ना
शान्त रहूँ मैं आस तोड़कर।।

इस पापी मन को समझाने
इतना तो कर ही पाओगी।
पता नहीं युग बीते जाते
बिन कुछ कहे चली जाओगी।।

बीत गया यदि सभी समय वह
जो इस जीवन के हित पाया।
फिर क्यों किसकी खोज लगानी
व्यर्थ गया तब सभी गँवाया।।

प्रेम एक सागर है निर्मल
आशा उसमें खिला कमल है।
रूप रंग की बात न कहनी
उसका तो जीवन निश्छल है।।

कहता-कहता थका जा रहा
शुभे न जाने कैसी होगी।
किन्तु सभी यह प्रश्न कर रहे
प्रेयसि तेरी कैसी होगी?

Scanned with CamScanner

यदि तुमको जाना ही होता
संदेशा ले जाना होता।
यूँ ही नहीं डोलती रहती
मैं भी अपना समय न खोता।।

किसे पता था उसकी मेरी
इतनी ज्यादा दूरी होगी।
शेष नहीं कुछ कहने को अब
बाट जोहती बैठी होगी।।

उसकी हर पहचान बतादी
अब तक तुमको हो आना था।
उसकी पीड़ा उसके दुःख को
कुछ तो तुम्हें बँटा आना था।।

बड़ी खचैक मन में लगती है
जाने क्या-क्या कहती होगी।
अपने मन को मारे योगन
चुप-चुप नयन बहाती होगी।।

तुम पर बंधी आस है मेरी
मुझे निराशा ना दे देना।
मैं तो एकदम टोली गया हूँ
यूँ भटका कर मत रख देना।।

'भुला दिया मुझको बालम ने'
यही रटन्त लगाती होगी।
युग बीते संदेश न आया
सजनी मन में कहती होगी।।

कभी सोचता हूँ क्या कहना
होना जो होना ही होना।
जब होगा मिलना तब होगा
व्यर्थ बात को क्यों कर ढोना।।

Scanned with CamScanner

कुसुम झर गये पात झर गये
पतझड़ बे मौसम घिर आया।
जिसे सहारा समझा मैं ने,
उसने ही मुझको बहकाया।।

इसी तरह के कौव मौव में
सारी रात बिताती होगी।
और सिसकियाँ बनी सहेली
उसका साथ निभाती होगी।।

कभी-कभी तो जलधि हृदय का
मानो बिखर प्रलय रचने को।
उमड़-उमड़ कर ज्वार चढ़े रे
नील गगन को छू लेने को।।

बड़ी कलकली सी लगती है
अब तुमको कैसे समझाऊँ।
कैसे फेड़ूँ उर की पीड़ा
किसको अपना मीत बनाऊँ?

'लो जाड़ों का हुआ आगमन
वो ना आये कहती होगी।'
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

कौन जानता कल क्या होगा
अब तो यह जीवन है धोखा।
मैं तो भाग रहा था मग में
नहीं किसी ने मुझको टोका।।

मृगतृष्णा सी भटक रही जो
कब उसको विश्राम मिलेगा।
फैल रही आकाश बेल सी
कैसे इसे विराम मिलेगा।।

Scanned with CamScanner

आशाएं जीवन्त हो सकें
कुंजी भला कहाँ वह होगी।
भव के भँवर पड़ी है तरणी
कैसे पार लगा पाओगी।।

जीवन के इस लम्बे पथ पर
मिलते और बिछड़ते अपने।
खोने औ पाने का क्रम है
है संयोग वियोग बस सपने।।

लेकिन हम क्यों बिछुड़े ऐसे
रही नहीं मिलने की आशा।
शायद ऐसा ही होना था
लेकर झूठी यही दिलासा।।

दुःख बीतेगा सुख आयेगा
जीवन की चादरिया बुनते।
पर दुःख ने आसन साधा है
कैसे सुख के ताने चुनते।।

सभी वृक्ष तो पर्णहीन हैं
हे पयँ तुम हरियाते दिखते।
उसके जीवन में भी ऐसी
हरियाली जाकर तुम भरते।।

कोई तो आयेगा उसका
या वे ही भेजेंगे वाहक।
दिन मनकों की माला गिनती
विरह तपस्या में रत होगी।।

माघ पूस की शीत बयारें
हवा छुरी सी लगती होगी।
प्रातः धरती के आँगन को
पाले से भर जाती होगी।।

Scanned with CamScanner

वह पानी की गगरी लेकर
तीर नौल को जाती होगी।
रूपराशि की स्वामिनि सजनी
वह अनुपम छवि कैसी होगी।।

डाल-डाल ने वसन तजे हैं
वे भी सभी हयुँवारी सहते।
उसको ढाँढस बँधा रहे हों
खड़े-खड़े अगुवाई करते।।

शिखर-शिखर ढक गये बर्फ से
ठिठर रहे हैं जंगल सारे।
दाना तिनका चले खोजने
पांखी अपने पंख पसारे।।

गौ-बछियों की घास खोजने
वह भी वन को जाती होगी।
हाथ लपेटे फोचि में अपने
किट किट दाँत बजाती होगी।

ऋतुएं करवट बदल बदल कर
अपना रूप दिखा जाती हैं।
एक एक कर क्रमवत आकर
'मैं आयी लो कह जाती हैं।।'

माघ पूस में ह हा शुभागा
कैसी हालत होती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊं कैसे
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

मुझसा कोई दूर मार्ग पर
जब घर आता जाता होगा।
उसकी भोली अँखियों को वह
अपना सा लग जाता होगा।।

Scanned with CamScanner

मुझे समझने के भ्रम से ही
लजा-लजा वह जाती होगी
रक्तिम गालों में तब उसके
और लालिमा छाती होगी।

एक बार फिर महाशिशिर में
निज को घिरा हुआ पायेगी।
और पल्लवित मधुर कामना
फिर से सब मुरझा जायेगी।।

नयन नीर गंगा जमुना बन
गालों पर से उतरायेगी।
कितने दिन हो गये न आये
कैसे मन को बहलायेगी।।

ऐसे में संदेशा पाकर
वह कितना खुश हो जायेगी।
किसकी ठौंणी किसका जाड़ा
उसे निमैली लग जायेगी।।

मुख मण्डल से चिन्ताओं की
रेखा सारी छट जायेगी।
सच-सच कहना चिन्तातुर को
यह शुभ अवसर दे आयेगी?

नहीं तूलिका इन हाथों में
मैं उसको चित्रित कर देता।
और प्रेम जल लेकर उसमें
रंगोली सी मैं भर देता।।

फिर तो कभी न कहना पड़ता
मेरी प्रियतम ऐसी होगी।
अरे कहाँ को, चली गई तुम?
सुन लेती वह कैसी होगी।।

Scanned with CamScanner

मरूभूमि में जलबूँदों सा
मेरा यह संदेश हो गया
इतनी दूर यहाँ मैं चिन्तित
कहां दूर वह देश हो गया।

पता नहीं क्यों आज सभी को
मुझसे इतना द्वेष हो गया,
पहले केवल मन था पगला
अब तो पूरा वेष हो गया।

उसके सूने मन-अम्बर में
कोटि-कोटि तारक मुसकाते।
महातिमिर के ताने बाने
एक-एक कर सब छँट जाते।।

संदेशा देकर तुम उसको
पथ आलोकित कर आओगी।
अमानिशा के अंधकार के
बंध विलग तब कर पाओगी।।

लहर-लहर लहराता है वो
अचल रहा अब तक जो सागर।।
लहरों से लहरें टकरातीं
पता नहीं किस लोक से आकर।।

फिर भी तृषित रहा मन मेरा
क्या तुम प्यास बुझा पाओगी।
वह भी तृषित रही मुझ जैसी
क्या उस तक तुम हो आओगी।।

एक दिवस भी युग सा बीते
फिर कैसे हम मिल पाएंगे।
दुःख कण्ठी, दुःख माला लेकर
बस जपते ही रह जाएंगे।।

Scanned with CamScanner

मुझको लगता मेरे सम्मुख
तुम बैठी ही रह जाओगी।
या मुझको संशय में रखकर
मुझसे दूर चली जाओगी।।

भला भटकता भ्रमित भंवर मन
जाकर कहाँ करेगा ठौर।
मानो चलते ही रहने का
इस जीवन में आया दौर।।

किसी सखी को सुखी देखकर
उसको मनसुप लगते होंगे
अनचाहे ही उन नयनों से
मोती से झर जाते होंगे ।

मन में बैठा मौन कुरेदे
पीड़ा यह कब तक कम होगी
आप बतादो क्या बतलादूँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।

भर निसास से गुम सुम सी वह
याद मुझे ही करती होगी।
लेकिन क्या बतलाऊँ तुमको
मेरी ग्राम्या कैसी होगी।।

रंगोली के बुट्टों वाला-
उसका लाल पिछौड़ा होगा।
हरा घाघरा हरियाली का-
रंग वहाँ बिखराता होगा।।

पूनम के चंदा सी झूली
उसके नाक नथूली होगी।
किसी कवी की कल्पित कोमल
मधुर भावना जैसी होगी।।

Scanned with CamScanner

माथे पर अनुरागी बिंदिया
चमक-दमक सुशोभित होगी।
लाल-लाल सुन्दर रोली से
सुघड़ नासिका छाजन होगी।।

पूजा थाल सजाकर सजनी
देवी मंदिर जाती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

चुव कैसी डाली स्यूनी में
सजनी के सिन्दूर सुहाये।
भ्रमर भ्रमित आकर जब कोई
सजनी का माथा छू जाये।।

'हट निलज्ज' कह कर वह अपने
मन ही मन शरमाती होगी।
लेकिन तुम्हें बताऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगीं।।

एक दमकता उसका आनन
एक जून गगनांगन झूली।
एक इन्दु जल में है उतरी
एक झूलती नाक नथूली।।

अखण्ड सुहाग चरेऊ उसका
कण्ठहार बन रहता होगा।
और चूड़ियों की खन-खन का
सुर संगीत खनकता होगा।।

स्वप्न परी सी घर द्वारों को
मंगलमय वह करती होगी।
अब भी क्या बतलाना होगा?
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

Scanned with CamScanner

उसके ओंठों की पाँखुरिया
वह बुराँश फूलों की लाली।
उसकी उलझी अलकों में तुम
पाओगी वह उलझी बाली।।

उसकी कटि की मटक मनोहर
नागिन लटी लटकती होगी।
अस्त व्यस्त सी गुँथी धमेली
बलखाती लहराती होगी।।

मेरी छवि सिरहाने रखकर
बावरि वह बतियाती होगी।
नहीं खबर ना पाती कोई
'कैसे हैं वो कहती होगी।।'

या वह हँसिया के कोने से
मिट्टी पर कुछ लिखती होगी।
मेरा नाम लिखा होगा औ
अपलक उसे निहारी होगी।।

गंङ्गलोड़े पर बैठ नदी तट
गीत सलोना गाती होगी।
और गाड़ के मृदु पानी को
पैरों से छलकाती होगी।।

'कुछ दिन में आ ही जायेंगे'
सपना मधुर सजाती होगी।
खुशियों भरी अश्रुधाराएं
आँखों से बह जाती होगी।।

फिर तो समझो काम बन गया
अपनी सुमना कैसी होगी।
यही समस्या का निदान है
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

Scanned with CamScanner

देखोगी संदेशा पाकर
उसकी मुख श्री खिल जायेगी।
मन ही मन वह इष्टदेव की
बारं बार स्तुति गायेगी।।

उसकी अँखियों में खुशियों के
छलछल आँसू तुम पाओगी।
किन्तु तुम्हें बतलाऊँ क्या मैं
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

स्वामी के संग कोई नवेली
इधर-उधर जब जाती होगी।
'कैसी भागि है' कहकर उसको
देखी ही रह जाती होगी।।

मैं भी अपने पिय संग जाती
मैं भी अपने पिय संग होती।
यही सोचता पटै गया हूँ
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

सच में तुम सुनती हो बातें
या मेरा बक्तार चल रहा।
अरे कहाँ हो सुनो जरा तुम
या मेरा मन मुझे छल रहा।।

या औरों की भाँति ओ् बैणा
बार-बार क्या मुझे छलोगी।
लेकिन क्या कहदूँ मैं तुमको
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

कभी-कभी मैं ठगा-ठगा सा
तुम्हें देखकर रह जाता हूँ।
असिण-पसिण हो जाती मुझको
पास नहीं तुमको पाता हूँ ।।

Scanned with CamScanner

बीत रही जो मुझ पर सुनलो
सिवा तुम्हारे अपना कौन?
साँसें टिकी हुई हैं तुम पर
सच कहता हूँ बहना पौन।।

तुमने बहना कभी प्रीत की?
नहीं, अगर तो तुम क्या जानो।
प्राण हीन यह देह हो रही
थोड़ा कहा इधर भी मानो।।

इसी पीर में सनी पगी सी
उस घायल को तुम पाओगी।
यहाँ-वहाँ सारे जग फिरती
वहाँ भला कब तक जाओगी?

सुनो, गैल पातल सखियों संग
घास काटने जाती होगी।
और दराती छुणुका-छुणुका
दुखड़ा अपना गाती होगी।।

पैर पसारे किसी सखी के
सिर में ठूँङ लगाती होगी।
ठहर गई फिर बात वहीं पर
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

पूव घास के बाँध-बाँध कर
गढई एक बनाती होगी।
निज उदेख, नरई, पीड़ा सब
गिनगिन मन में रखती होगी।।

आवें उन्हें सुनाऊँगी सब
फाँची एक बनाती होगी।
लेकिन किसे सुनाए मुझ बिन
ज्यों की त्यों रह जाती होगी।।

Scanned with CamScanner

आशाओं की डग मग करती
दीप शिखा जब बुझ जायेगी।
प्रिय दर्शन की, अँधियारों में -
तृष्णा पूरी हो पायेगी?

वैसे भी यह झोली खाली
नहीं शब्द हैं शेष कह सकूँ।
टण्टा-मण्टा छोड़ूं ये सब
इनका भी ना भार सह सकूँ।।

तुम भी बहना बस छलना हो
छलना ही तुम दे जाओगी।
क्या परिभाषित करूँ बता दो
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

हो ही जाते पूर्ण अभी तक
हम तो रहे अधूरे-आधे।
इस बैचा्लि मन को बतलादो
साधक कौन रखे जो साधे।।

इसीलिये आतुर, अति आतुर
कुछ तो राह सुझाई होती।
प्रश्न करोगी या कह दोगी
क्या पहचान प्रिया की होगी।।

जलता रहा अग्नि पथ चलता
अब थोड़ा विश्राम करूँ मैं।
सारी उलझन सुलझाने को
तन से मन को दूर करूँ मैं।।

जग प्रपंच में भ्रमित रहा था
राह नयी अब वरण करूँगा।
छोड़ूं सुख-दुःख की गठरी को
नव पग में मैं चरण धरूँगा।।

Scanned with CamScanner

पीड़ा को ही मीत बनाकर
गीत सदा गाता आया था।
अपने स्वर सुर ताल बद्ध कर
इस जग को देता आया था।।

खूंटी टूट गयी वीणा की
तार-तार हो गये तार सब।
मन्द-मध्य-तार सब उतरे
बन्द हो गये नाद सभी अब।।

मुटठी बन्द लिये आये हैं,
अपना-अपना भाग बंधाए।
देश विराना छोड़ के जाना
इक दिन होंगे सभी पराये।।

ऐसा होगा किसे पता था
पता नहीं हम क्या ले आये।
बना बनाया महल ढह गया
ऐसा जीवन किसको भाये।।

दिवस सभी कंचन हो जाते
और रजत हो जाती रातें।
रजनीगंधा की सुगन्ध सी
महकी-महकी होती बातें।।

हीरे के कणिकों से तारक
झिलमिल आपस में बतियाते।
उरमाला सी अलसि गई हैं
एक-एक कर उसकी यादें।।

युग-युग से मैं देख रहा हूँ,
नहीं यहाँ कोई भी अपना।
प्रियतम से मिलने का अब तो
कभी न होगा पूरा सपना।।

Scanned with CamScanner

निष्ठुर है यह देश बिराना
व्यर्थ गया सब मेरा कहना।
अब तो छोड़ मिलन की आशा
मार्ग और-और ही चलना।।

उसके नाम की माला लेकर
अब तो जपते ही रहना है।
आना जाना तुम ही जानो
नहीं मुझे अब कुछ कहना है।।

उसके बिन रहना ही होगा
जाकर उससे ही मिलना है।
दुख-सुख का क्रम कट जावेगा
काल चक्र चलना-चलना है।।

लगा टूटने मेरा साहस
धुँधलायी सी याद हो गयी।
अब तो सदा-सदा को हृद भी
कहता तेरी हार हो गयी।।

उसकी भी हो, मुझे क्या पता,
निज पीड़ा में लिपटी होगी।
ढुव-ढुव बहते अश्रु नीर को,
पीकर प्यास बुझाती होगी।।

बेलिया-आज-भोल का क्रम है
इक दिन यह क्रम कट जायेगा।
साँसों की डोरी खिंचते ही
मन का कटु भ्रम छँट जायेगा।।

कितने-कितने सपन सँवारे
कितने-कितने लक्ष्य सँवारे।
क्रूर काल के चक्र तले सब
बिखर गये पल भर में सारे।।

Scanned with CamScanner

अब तो केवल बात शेष है
एक अनन्त सी रात शेष है।
सूखी सी इक डाल झूलती
नहीं एक भी पात शेष है।।

मुझको उसको और तुम्हें भी
एक दिन तो जाना ही होगा।
मधुर मिलन प्रियतम से करने
मारग तय करना ही होगा।।

इसी तरह मैं, शायद तुम भी
भटके हैं माया के पथ पर।।
चोर पाँच मन भीतर बैठै
पल-पल करते काया जर-जर।।

क्या अशेष क्या शेष रहेगा
क्या होगा कुछ नहीं पता है।
समय निरन्तर बना रहेगा
होना जो होना ही होना।।

मैं भी कैसा रहा बावला
दुःख अपना अपने में रोया।
हर पल अपने ही हाथों से
अपने मन में विष ही बोया।।

सुनो सुन रही हो ना बहना
यह माया का जाल न कटता।
जीवन भर ही रहे सालता
सच-सच अपने मन की कहता।।

●

Scanned with CamScanner

अपराध बोध ग्रसित यह काठी
जानी है उसके ही पास
उसे न होगी मेरी आस।।

बार बार क्वठ में काँटे सी
चुभती ही रहती है पीड़ा,
ढहता रहा याद का भीड़ा।।

कुमर सरीखी धँसती जाती
मन में छिन-छिन बीती बातें
मरना भला न कटती रातें ।।

बंधारी सी टप-टप, टप-टप,
याद पँडुरती रह जायेगी
आँख टपकती रह जायेगी।।

संदेशों से भरी पिटारी
धरी थी, धरी रह जायेगी
प्राण हंसिनी उड़ जायेगी।।

अब तो सब आशाएं धूमिल,
मेरी सुन,कर चुके पलायन
नहीं कहीं दिखता अपना पन।।

घुघुती,कफुवा अर मोनाल भी ,
आये सब,सब चले गये अब,
सबका अपना-अपना मतलब।

मैंने समझ तुझे अपना ओ ,
बहना सब कह डाली मन की,
चली निपटने सुधि भी तन की।।

मन्द सुगन्ध माटी से सौंधी
तुम्ही चुराकर ले जाती हो
फिर जग में बिखरा जाती हो।

Scanned with CamScanner

लेकिन मेरे काम न आया
मैंने सबको समझा अपना
मात्र रहे वो मुझको सपना।।

अब तो मारग पकड़ लिया है
अधिक नहीं मुझको कहना है
मात्र लक्ष्य लेकर बढ़ना है।।

तुम सबने तो हरा दिया था
मैंने हार नहीं मानी है
इच्छा मेरी अभिमानी है।।

एक एक कर आये तुम सब
वैसे ही सब चले गये हो
मुझको मूरख बना गये हो।।

●

Scanned with CamScanner

सच कहता हूँ नहीं चाह प्रिय आलिंगन की
पुष्ट भुजाओं में भरलूँ उसके यौवन की।
लगन लगी है मुझको तो बस प्रिय दर्शन की
प्रिय दर्शन की प्रिय दर्शन की प्रिय दर्शन की।।

●

जब पग मग धर दिये कहाँ विश्राम, मात्र आगे जाना है
करुणे, शुभे, सुवा, सुमना में जाकर मुझे समा जाना है।।

यों तो मिलना दूभर ही था अब तो मिलना हो जायेगा
पथ से भटके एक पथिक को उसका मारग मिल जायेगा।।

●

अब जाकर मैं बीते युग की
सभी विवशताएं जो भी थी।
सब जाकर उससे कह दूँगा
बार-बार जो साल रही थी।।

शीश नमन, नत होकर ही तो
विनय सभी से की थी मैंने-
जो भी सम्मुख आया मेरे
दुखड़े गाये थे सब अपने।।

ये वे कठिन, सुगम जो भी थे-
मारग आपस में बिछड़े थे।
मात्र मिलन की लिये वेदना
लगा कि युग-युग बीत गये थे।।

●

Scanned with CamScanner

वे सभी तो साथ मेरा छोड़ कर आगे बढ़े थे
जिन्हें अपना समझ मैंने मिलन का दीपक जलाया।
सांत्वना झूठी, दिखाये सपन झूठे, मुझे सबने
पकड़ ली थी राह अपनी, हाथ मेरे कुछ न आया।।

कट गये लो वह दुखद क्षण, लिये तृष्णा -
मरीचिका सी डोलती ही रह गई थी भावनाएं।
थकी हारी वही तो अभिशप्त अपनी आतमा थी
मिलन की थी हो चुकी धूमिल सभी सम्भावनाएं।।

धवल हिमगिरि है सुशोभित ठौर अपनी
और मैं भी तो निकट ही आ गया हूँ।
यहीं तो वो भी कहीं से बाट मेरी तक रही हो
खो चुका था जो प्रणय मैं, इस निमिष वह पा गया हूँ।।

शिखर वे, नदियाँ सरकतीं छलछलातीं
हरित प्रान्तर हैं सुवासित सभी तो ये।
पार जिनको कर गया था विवशता में
आज फिर से हो गये हैं सपन सब साकार मेरे।।

सामने उस नदी तट पर खेलती हैं बालिकाएं
रेत के घर बनाती थीं, क्रूर लहरें मिटा जातीं।
यही तो है स्वर्ग इनका वे उन्हें फिर-फिर बनातीं
सजातीं चुन कुसुम कलियाँ उन्हें फिर-फिर।।

क्रूर लहरें हों कि हों तूफान आयें साथ मिलकर
मिटा पाये क्या कभी दृढ़ इच्छा शक्ति को किसी की।
धन्य हैं ये बालिकाएं और इनका अकथ साहस
हार कर भी जीत में बदली है देखा इनकी करनी।।

Scanned with CamScanner

स्वयं में भी मिट चुका सब सोचता था
हार सी खाकर पड़ा रहता वहीं मैं निरीहों सा।
किन्तु किस अदृश्य ने आकर जगाया था मुझे
पाषाण में भी चेतना थी लौट आयी।।

खिल गये दिन सुमन बन कर आज मेरे
और पथगामी बना उत्साह का संबल लिये हूँ
कट गये हैं फन्द भव के आज सारे
आज प्रिय के देश को मैं बढ़ गया हूँ।।

न जाने किस रूप में, किस मोड़ पर हो
सजा कर वह मृदुल उपवन निज हृदय का।
धक-धकाता मन लिये कुछ लजाई सी
खड़ी होकर राह मेरी तक रही हो।।

नव बधू सी कल्पनाएं पिरो कर इक सूत्र में वह
ओट में घूँघट के निज मुखड़ा छुपाये।
मिलन था वह प्रथम अपना इस तरह कुछ
आज मुझको चित्रपट सा दृष्टिगोचर।।

नराइ बाटुइ उदेखों से भरे दिन वे हुए ओझल
लगे खिलने फूल थे चहुँ ओर कोमल।
क्या पता किस किससे मैंने विनय की तब
काम लेकिन एक भी मेरे न आया।।

अब मिलन प्रिय से न होगा इस जनम में
लकीरें विश्वास की पाषाण का घर कर चुकी थी।
और मन की उमंगें भी शिथिल पीड़ित
चेतना जड़ हो चली थी कुछ न होगा।।

Scanned with CamScanner

यही सब कुछ सोचता मैं कब न जाने
बंध गया बाँहों में जाकर प्रियतमा के।
हो गया पुलकित, हृदय के तार झंकृत
मिलन का संगीत था सर्वत्र बिखरा।।

फिर उन्हीं निष्ठुर पवन, शशि, तारकों ने
खट खटाये द्वार 'ये क्या कर रहे हो?'।
स्वप्न से जागे से देखा रात का आँचल था फैला
उड़ चले हम पखेरू बन फिर गगन में।।

●

Scanned with CamScanner

महंत त्रिभुवनगिरि शिष्य श्री श्री 108 दीनदयाल गिरि, प्रकटेश्वर, डंगोली (बागेश्वर)। जन्म 11 पैट कार्तिक 2002 बानड़ी देवी, अल्मोड़ा। शिक्षा – एम.ए. (हिन्दी साहित्य) एवं संन्यास।

श्री लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) में श्री रामलीला नाटक मंचन में नवीन प्रसंग, कस्टयूम, मेकअप, क्राफ्ट वर्क, दशहरा महोत्सव में पुतला निर्माण, दुर्गा महोत्सव में भागीदारी व परशुराम, हनुमान, अंगद, दशरथ, रावण आदि के पात्रों की विगत वर्षों से पात्रता।

आकाशवाणी अल्मोड़ा, नजीबाबाद, लखनऊ से कविता, वार्ता, नाटक, संगीतिका, धारावाहिक आदि का प्रसारण।

उत्तराखण्ड की प्रमुख लोकगाथाओं पर एक दर्जन से अधिक नाटक/नाटिकाओं का लेखन, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर दर्जनों बार मंचन।

'बाँजि कुड़िक पहरू' (प्र.का.), बुरूँश, किरमोई तराण, पच्छयाण आदि काव्य संग्रह। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में साहित्यिक सामग्री का प्रकाशन। साप्ताहिक पत्रिका हिलाँश में प्रवासी के नाम चिट्ठी स्तम्भ लेखन। वर्ष 1976 में 'बास रे कफुवा', 'धार में दिन' का चक्र मुद्रण से प्रकाशन।

कुमाउनी चलचित्र 'मेधा आ' के गीत व कहानी, 'बलि वेदना' में संवाद, गीत व अभिनय, 'शिवार्चन' में संवाद व अभिनय, 'पधानी लाली' में लेखन, 'आईगे बहार' कहानी व अभिनय, 'आपण–बिराण' कहानी पटकथा, संवाद, गीत व अभिनय, 'अभिमान ठुल घरै चेलिक' में आंशिक अभिनय।

'भाना गंगानाथ', 'सीता परित्याग', खण्डकाव्य, कहानी कविता, 'बाँजि कुड़िक पहरू' (द्वी), नाटक संग्रह आदि प्रकाशन की राह में।

Scanned with CamScanner